ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 फरवरी 2003 | *वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)*
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में) | वर्ष 23 अंक 4

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



सद्गुरू टेऊँराम रचित
सोलह शिक्षाऐं

चोथीं-सिख्या

सद्गुरू टेऊँराम रचित
सोलह शिक्षाऐं

सर्व से तुम गुण उठाओ, दोष दृष्टि को हरे।
देख अवगुण आपना, जो बहुत है मन में भरे।।

सत्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज जिनि फरमाईनि था त हिन संसार में सभनी हंद अच्छायूं ऐं बुड़ायूं मिलन थियूँ, पर असांखे उन्हनि मां फकत अच्छायूं यानि गुण ही चूण्डिणा आहिनि। अगर असां कंहि माण्हू, संस्था, घटना उपदेश , इतिहास या शइ जी छण्डछाण (विश्लेषण) कंदासू त असांजे साम्हूँ सागिए वक्तु हिकई हंद कुझ अच्छायूं (गुण) त कुझ बूड़ायूं (दोष) नजर ईदियूं। असांखे पंहिजी दृष्टि नजर - ज्ञान- बुद्धि अच्छायुनि ते ही विझणु घुरिजे, इनसां असांजो कल्याण थींदो। अगर असां पंहिजी दृष्टि बुड़ायुनि ते विझंदासूं त असांजे ज्ञान बुद्धि जो नाश थींदो, छोत बुड़ायुनि ते नजर रखण सां असांजे मन में बुड़नि विचारनि जो अचणु शुरू थी वेंदो आहे। जीअंत कंहि वक्त कंहि बेईमान या गलत कम करण वारे माण्हूअ खे अर्सी सुखी दिसंदा आहियूं ऐं ईमानदार माण्हूअ खे दुखी त उन वक्तु असांजी दृष्टि बुड़ाईअ जी वकालत कंदी आहे ऐं मन में अनेक बुड़ा वीचार ईदा आहिनि। ईमानदार माण्हू पंहिंजो पाणखे कोसण लगंदो आहे ऐं हू हताश ऐं निराश थी पवंदो आहे। हुनजी बुद्धि-ज्ञान नाश थियण लगंदो आहे।

इहो वैज्ञानिक सचु आहे त पूरे वायु मण्डल में सुठनि ऐं गलत (बुड़ा) वीचारनि जो फैलाउ आहे जीअंई असांजे मन में को गलत या बुड़ो वीचार ईदो आहे ऐ असांजो मन उनमें रस वठंदो आहे ऐं वायुमण्डल में फैलियल बुड़ा वीचार असांजें मन में उथियल बुड़े वीचार जो साथ दियण वास्ते उनजे वेझो ईदा आहिन। धीरे-धीरे बुड़नि वीचारनि जो साम्राज्य छांइजी वेंदो आहे ऐ असांजी बुद्धि ऐं ज्ञान जो नास थीदों आहे। टीक इन्हीअ तरह जीअंई असांजे मन में को सुठो वीचार ईदों आहे तीअंई वायुमण्डल में फैलियल सुठा वीचार उनजे वेझो ईदा आहिनि ऐं असांजी बुद्धि ऐं ज्ञान जो वाधारो थींदो आहे ऐं असांजे साम्हूं अहिड़ा अहिड़ा नजारा ईदा आहिनि जिनसां इहो साबितु थींदो आहे त बुड़ाईअ जों अंतु बुड़ो ऐं सुठाईअ जो अंतु सुठो थींदो आहे। इनकरे असांखे सभनी जा गुण ही दिसण घुरजनि न कि दोष। दिसण सां असांजे ज्ञान जो नास थींदो। अगिते गुरू महाराज जिनि चयो आहे त अवगुण (बुड़ायूं) अगर दिसणा आहिनि त पंहिजा ही दिसो जेके घणी तादाद में पंहिजे मन में भरिया पिया आहिनि अगर इंसान शांत चित सां दिसंदो त हुनखे मथें समझायल नमूने इहो पूरो अहसास थींदो त जदंहि जदंहि हू बियनि जा गुण ऐं पहिंजा दोष दिसेथो तदंहिं हुनजो ज्ञान वधे थो हुनजो विवेक जागे थो हुनजी बुद्धि सही फैसलो करे थी इन्सान जदंहि बियनि जा दोष ऐं पंहिजा गुण दिसे थो तदंहि तदंहि हू अज्ञानी, अविवेकी ऐं बुद्धिहीन प्राणीअ वांगुर कम करे पंहिजो नुकसान पाण ही करे थो। अशांत ऐं असंतोषी बणिजे थो।

अचो त अजु हिन सिख्या ते हलण जो प्रण करियूं जीअं दुनिया में चौधारी गुणनि जी सुगंध फैले ऐं सभेई संतोषी बणिजनि।

गोविन्दराम 'माया' जयपुर

धारावाहिक ३६

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

राग प्रभाती भजन क्र. २ पृष्ठ क्रमांक १३

रे मन हरि का सुमरन करले, श्रद्धा मन में धारे।

हरि सुमरन बिन और साधन, जन्म मरन नहि तारे, हरि सुमरन ही तत्क्षण तुझको, भव सागर से तारे।१।

हरि सुमरन की महिमा भारी, वेद पुरान उचारे, हरि का सुमरन निशवासर कर, जे सुख चाहो प्यारे।२।

हरि सुमरन से हेत करो तुम, फुरना सर्व निवारे, हरि सुमरन का अमृत पीकर, पावो मोक्ष द्वारे।३।

हरि सुमरन की वेला है यह, कहत संत पुकारे, कहे टेऊँ हरि सुमरो तांते, मानुष देह मंझारे।४।

व्याख्या

श्री गुरू महाराज जी इस भजन में सुमरन की बहुत महिमा कर रहे हैं, हमारा ध्यान एक बार फिर उस ओर ले जा रहे है जिस तरफ हमारी यात्रा है। मन का स्वभाव है वो बार–२ भटक जाता है अभी–अभी सुजान है अभी –अभी अंजान है, इसलिए एक ही बात को महापुरूष बार बार दोहराते है उन्हे दोहराना पड़ता है हमारे कारण। मन समझता भी है फिर नासमझी करता है फिर नादानी करता है इसलिए संत सत्गुरू , महापुरूष मन को सत्संग का कोड़ा मारते रहते हैं ताकि हमारा मन परमात्मा की और निरन्तर जुडा रहे इसलिए सदैव सत्संग सुनना चाहिए।

प्रथम भगति सन्तन कर संगा।
दूजी भगति सुन कथा प्रसंगा।।

रामायण भी इसी का समर्थन करती है, हे मन–तू सदैव सतों का संग करले, सत्संग कर सत्य का संग कर वहीं से मन निर्मल होगा और निर्मल मन को धीरे –धीरे सिमरन से जोड़ना होगा क्योकि सिमरन के बिना सच्चा जागरण नहीं होगा, कुछ फायदा होगा पर पूरा नहीं। अगर पूरा फायदा चाहिए तो मन को सिमरन में डूबना होगा सिमरन में डूबे बिना जन्म मरण का चक्कर खत्म नहीं होगा अपने स्वरूप का पता नहीं चलेगा मन एकाग्र नहीं होगा।

सुमरन बिना मन की बीमारियों से पीछा नहीं छूटेगा गुरू मूरत में नृति मिलायें, अपनी जो नजर है अपनी जो निगाह है दृष्टि है वो गुरू मूरति में मिलाऐं सार शब्द में सुरति लगायें। सार शब्द से जो सारे शब्द आदि मंत्र आपको गुरू ने दे दिया है, उसी में सुरति लगाऐं गुरू शब्द और प्रीती जगाऐं गुरू ज्ञान में, आत्म ज्ञान में वृति लगाकर अन्तःकरण स्वस्थ्य करें। अन्तःकरण में बहुत सारी बीमारियां भरी पड़ी है तुम उन बीमारियों से आजादगी पाओ मुक्ति पाओ निजात पाओ अन्तःकरण में काम क्रोध लोभ मोह अहम ईर्ष्या वासना तृष्णा वैमनस्य वैर विरोध ये जो भरे पड़े है बीमारियां हैं अपने चित्त को निरोग करो गुरू महाराज जी कहते हैं।

मोह ममत का तागा तोड़े चित्त वृति को हरि से जोड़े

मोह और ममता मोह ममता का तागा तोड़ो, देखने में वो बारीक सा धागा है लेकिन मोह फास फासी अजर छूटे न आन उपाय से बड़ी बारीक तंतु है देखने में भी नही आयेंगे आप को लेकिन ये मोह के धागे जीव को अनन्त अनन्त जन्मों में धक्के खिलाते है एक आदमी मर रहा है मुहँ से आवाज बन्द है और उसके बाद में भी इशारे कर रहा है। बल्कि समझें शायद पुराने जमाने में धन गाढ़ते थे कहीं तो धन गढा होगा जमीन में या दीवाल में या कहीं और जगह हमें इशारे कर रहा है, कहने का मतलब यह है कि मरते हुए आदमी को कुछ सांसे वापस दिला दी गयी सांसे वापस, आने के बाद उस बूढ़े आदमी ने कहा कि अरे मूर्खों वो बछड़ा देखो, वो झाडू खाये जा रहा है। तुम सब मेरे पास बैठे हो, अभी तो मैं जिंदा हूँ, मैं मर जाँऊगा तो क्या करोगे सभी ने माथा ठोककर कहा मरते मरते भी घास के झाडू में अटका हुआ है। बताओ कौन सी योनि इसे मिलेगी। बैकुण्ठ मिलेगा, स्वर्ग मिलेगा, देव योनि मिल जायेगी, यक्ष में कीनर जायेगा, नहीं ये मोह की फांसी में बंधा हुआ जीव मोह में भटकता है।

लेकिन अगर नाम सुमरन में जुड़ गए ज्ञान ठहरने लगा ज्ञान में स्थिति होने लगी तो किसी आसमान के स्वर्ग में नहीं जाएंगे। जीवन ही स्वर्ग हो जाएगा अपनी ही देह बैकुण्ठ हो जाएगी और उसमें आत्मा रूपी परमात्मा रमण करेगा लेकिन पहले लगन लगानी पडेगी, सिमरन का महत्व समझना पडेगा, मन लगे न लगे सिमरन करना पड़ेगा, शुरू–शुरू में मन बहुत परेशान करेगा। २ मिनट भी स्थिर नहीं रहेगा, अगर फिर भी हमने अपना नियम भंग न किया

सिमरन करते रहे मन जहाँ–जहाँ जाए वहाँ से पकड़कर सिमरन में लगाया साथ में सतसग और सेवा का साथ रहा भाव रहा तो सिमरन में से रस आने लगेगा मन शान्त होने लगेगा।

इतने प्रेमी और सन्त हुए है जिन्होने नाम सिमरन को महत्व दिया ब्रज में एक सन्त हुए जो बडे भजनी थे एक दिन वो भजन पर बैठे तो उनके मन ने उन्हे बहुत परेशान किया बार –बार भजन छोड़कर कड़ी में अटकने लगा उन्होने बहुत कोशिश की लेकिन उस दिन मन उनके बस में नहीं आ रहा था उन्होने अपने मन को बहुत समझाया कि प्यारे लालच छोड़ और भजन कर, पर मन समझने को तैयार न था इस तरह उनका पूरा एक दिन खराब हो गया मन प्रभु का सिमरन न करके कड़ी का सिमरन करने लगा तभी एक श्रद्धांलु महिला आयी और उन्होने आकर भोजन का निमन्त्रण दिया, सन्त जी ने कहा बहन मैं बाहर भोजन करने नही जाता मैं अपनी झोपड़ी में ही भोजन करता हूं उस स्त्री ने कहा ठीक है मैं भोजन यहीं ले आऊंगी, तब उन्होने कुछ सोचते हुए कहा, मेरे भोजन में रोटी चपाती कुछ न हो बस एक पतीला भर कड़ी ले आना, उस महिला ने कहा जी अच्छा और कल के दिन वह कड़ी बना लाई, कड़ी को देखकर उन सन्त की आँखो में आँसू आ गए, वह औरत कड़ी देकर चली गई और सन्त जी उस पतीले को झोपड़े में ले गए और मन से कहा कि तेरी कड़ी में चाह है तेरा भजन में चाह नहीं तो ले मैं तुझे आज कड़ी खिलाता हूँ और उसने भर–भर के कटोरे कड़ी खाना शुरू की, वो कड़ी खाता गया खाता गया और कहता जाय कि तुझे कड़ी चाहिए और खा और इस तरह खाता गया और उसका पेट नाक तक भर गया, अब हालत यह हो गई थी उल्टी आने लगी लेकिन फिर भी उसने् कड़ी खाना बन्द नहीं किया वह रोता जाए और कहता जाए कि तुझे कड़ी चाहिए और आखिर शरीर ने कड़ी पचाना बन्द कर दी और उसका मल मूत्र और उल्टी से भर गया और फिर भी यह कहता जाए कि रे मन तुझे कड़ी चाहिए, इस तरह उसने अपने मन को सजा दी एक दिन का भजन खराब करने पर सिमरन खराब करने पर उसने अपने मन को सजा दी ।

जब इतनी लगन जग जाए और एक दिन के भजन खराब होने पर बैचेन हो जाए। उसी दिन से सिमरन का फायदा होना शुरू हो जाता है परमात्मा उपनी अनुभूति की झलकें देने लगता है उन्ही के लिए सिमरन अमृत का काम करता है और ऐसे ही नाम सिमरन की महिमा सन्त गुरु, ऋषि ,ब्रह्मा, विष्णु, महेश गाते हैं। ऐसा नाम सिमरन जीते –जी मुक्त बना देता है। राम राम रटते–रटते स्वयं के राम होने की अनुभूति जग जाती है बोध हो जाता है सो श्री गुरु महाराज जी भी इसीलिए हमें नाम की और लगा रहे हैं।

पावन प्रसंग

निर्मल भाव की प्रार्थना भगवान को स्वीकार

निर्मल मन जन सोय मोहे पावा। मोहे कपट छल छिद्र न भावा।।

निर्मल मन वाला भक्त भगवान को शीघ्र प्राप्त कर लेता है बच्चों का मन स्वच्छ व निर्मल होता है, उनके द्वारा की हुई टूटी–फूटी प्रार्थना भगवान शीघ्र स्वीकार कर लेते हैं। एक संस्कृत के पण्डित जी भगवान के मन्दिर में प्रतिदिन संस्कृत के श्लोकों क़ा पाठ करते थे। प्रतिदिन पाठ करना उनका नियम था। एक दिन वे अपने पुत्र को मन्दिर में साथ ले गये। पण्डित ज़ी तो संस्कृत में श्लोकों से भगवान की स्तुति करने लगे। पुत्र श्लोकों को ध्यान से सुनता रहा। थोड़ी देर बाद उसने भी भगवान के सामने क, ख, ग, घ की ओलम पढ़ना शुरु कर दी। प्रार्थना करने के पश्चात् पिताजी ने पुत्र से पूछा। बेटा, तुम भगवान के आगे क्या पढ़ रहे थे। तो पुत्र ने कहा, पिताजी मैने आपके श्लोकों को ध्यान से सुना, उनमें मेरी सारी क ख ग घ ओलम के अक्षर ही थे, तो मैंने सोचा मुझे कोई प्रार्थना तो आती नहीं तो मैंने भगवान के आगे क ख ग की ओलम पढ़ना शुरू की और भगवान से कह दिया, भगवान जो तुम्हें अच्छा श्लोक लगे वह क ख ग की ओलम से स्वयं बनाकर स्वीकार कर लेना। तो ऐसी भी शुद्ध भाव वाली प्रार्थना भगवान को स्वीकार है।

कथा चूड़ाला शिखरध्वज

सुन ले रे निज घर की बात

धारावाहिक 25

आत्मा के विषय में कुछ भी कहना ऐसा ही है जैसे सूर्य को दीपक दिखाना। आत्मा अनुभव का विषय है यद्यपि अनुभव से ही ये जाना जा सकता है। परन्तु फिर भी महापुरूष उस आत्म तत्व के दर्शन की प्यास जगाते हैं।

सत्गुरू महाराज जी फरमाते थे जेसे कोई विदेश में रहता है, उसको कोई अपने देश की बात सुनाता है तो बड़ा चाव देकर के सुनता है। बहुत खुश होता है, ऐसे ही आत्म घर असली घर है–

तेरा तो घर है अविनासी, जन्म मरण का दुख न जाहीं।
जो अविनाशी घर तेरा है, कहे टेऊँ चल आत्म घर में।।

वो आत्म घर है। उस घर की वार्ता जब कोई सुनता है तो उसका भी दिल करता है कि मैं भी अपने घर में पहुँच जाऊँ। अपने अविनाशी घर की बात को सुनकर खुश होता है। जो जिज्ञासु होता है, मुमुक्षु होता है, उस बात को सुनकर बड़ा प्रसन्न होता है। उसकी प्यास जाग्रत हो जाती है। जैसे किसी स्थान की महिमा की जाए कि अमुक स्थान बड़ा सुन्दर है, ऐसा है, वैसा है तो सुनने वाले के मन में होगा कि हमें भी जाकर ऐसा स्थान देखना चाहिए। किसी खाने की वस्तु की महिमा की जाती है कि ये चीज बड़ी स्वाद वाली होती है, ऐसे बनती है, बड़ा आनन्द मिलता है खाने में तो सुनने वाले के मन में होता है कि ये चीज खायी जाए।

सन्त–महात्मा भी आत्मा की महिमा इसीलिए करते हैं कि हमारे मन में उस आत्मतत्व की प्राप्ति की प्यास जग जाए। इच्छा हो जाए कि बस उस आत्म तत्व को प्राप्त करना ही है, अपने आप को जानना ही है। ऐसे मन में भाव बन जाए। अतः आत्मा की महिमा की जाती है, उसके विशेषण बताये जाते हैं कि आत्मा ऐसा है, ऐसा है।

राजा शिखरध्वज को भी संत–महात्मा ये ही राज बता रहे हैं। जब संतो की शरण में, गुरु की शरण में राजा पहुँचा है तो मन में जिज्ञासा पैदा हो गयी। पूछ लिया कि:– भगवन् मैं कोन हूँ ? गुरु ने उत्तर दिया :–

अक्रिय आत्मदेव जो सर्व रूप है आप।
ऐसा निश्चय धारके जपले सोऽहम् जाप।।

गुरुदेव ने **मैं कौन हूँ** का उत्तर दे दिया। अगर एक प्रश्न का उत्तर मिलता है तो सब प्रश्नों का उत्तर अपने आप मिल जाता है। गुरु ने बताया कि आत्मा कैसा है–

आत्म अखण्ड स्वयं प्रकाशी घट घट तां अजियारा है।
अजर अमर अविचल अविनाशी साक्षी सृजनहारा है।

तो कैसा है आत्मा ? अखण्ड है, अविचल है स्वयंप्रकाशी है, अजर–अमर है, स्वयंप्रकाशी है, सृजनहार है और घट–घट में व्यापक है।

सत्चिदानंदमयी आत्मा

यहाँ तक कथा का प्रसंग होके आया था। आज के प्रसंग में याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं– हे भारद्वाज ! मुनि वशिष्ट कहते हैं– हे राम जी ! सत्गुरु महाराज जी कहते हैं– हे जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं ! गुरुदेव बताते हैं कि वो आत्मा कैसे है ? सत्चित् आनन्द ब्रह्म व्यापक। सत् है, चित्त है, आनन्द और व्यापक है।

बड़ा सुन्दर वर्णन किया है आत्मा के बारे में। सकारात्मक विशेषण दिये हैं। सत् है, जो तीनों कालों में एक जैसा रहे उसको कहते हैं सत्। जो प्रकाशरूप है उसको कहते हैं चित्। जो आनन्द देने वाला है। उसको कहते हैं आनन्द स्वरूप। सदैव एक जैसा रहने वाला है। पहले भी था। अभी भी है। आगे भी रहेगा। परन्तु एक जैसा रहता है। यानी पहले भी था तो उसी स्वरूप में था। ऐसे नहीं हम बचपन में तो छोटे थे। बालपन था हमारा फिर जवानी आयी बाद में बुढ़ापा आएगा, ऐसा नहीं है ब्रह्म के साथ। वो तो हमेशा एक जैसा है। इकरस है। विचार करना अपने शरीर में हम रहते हैं, थोड़ा गहरायी से अगर देखेंगे तो बचपन से लेकर आज तक जो **''मैं हूँ''** वो नहीं बदला। शरीर बदल गया, परिस्थिति बदल गयी, बहुत बातें बदल गयी, शरीर की

इन्द्रियाँ निर्बल हो गयी परन्तु मैं पूरे का पूरा रहता है। मैं बदला हूँ, ये पता नहीं चलता हमारे को। मैं बदल गया, मैं नहीं बदला बाकि ऐसा है ये शरीर बदल जाता है। अज्ञान के कारण कहते हैं कि मैं बालक हूँ, मैं जवान हूँ, मैं बूढ़ा हूँ। न बूढ़ा, न बालक हूँ। हकीकत में देखा जाए, यदि आँखें बंद करके विचार करेंगे तो मैं नहीं बदला और सब बदल गया। शरीर बदल गया। मैं जो है वो नहीं बदला। बदल सकता नहीं। एक जैसा है। कभी कह सकते हो कि बचपन में 'मैं' और था अब और हो गया हूँ, नहीं। मैं वो का वो ही हूँ, शरीर बदल गया, मैं नहीं बदला। अरे भाई ! तुम दूसरे आदमी हो। दूसरा नहीं हूँ। मेरा शरीर बदल गया, मैं तो वो का वो ही हूँ। तो 'मैं' नहीं बदलता, मैं एक जैसा रहता है और सदैव प्रकाश स्वरूप है। भले ही अज्ञान का पर्दा आने के कारण हमारे को दिखायी नहीं पड़ता या हम देख नहीं पाते। जैसे सूर्य के आगे बादल आ जाते हैं तो सूर्य ढक जाता है। सूर्य कहाँ और बादल कहाँ– बताओ ? सूर्य कितना बड़ा और बादल कितना छोटा फिर भी ढक जाता है। सूर्य नहीं ढकता परन्तु सूर्य और हमारे बीच में बादल आ जाता है। वैसे ही आत्मा स्वयं प्रकाश होते हुए भी प्रकाशस्वरूप होते हुए भी हमारे को नजर नहीं आता। अज्ञान का पर्दा ऐसा हो गया है। वेदान्त में उदाहरण देते हैं कि जैसे एक दीपक जल रहा हो और उसके ऊपर हांडी रख दी जाए। अन्दर दीपक और ऊपर से जो हांडी है उसमें २–४ छेद हैं जिससे दीपक के जलने का आभास होता है। उस दीपक का दर्शन कब होगा ? जब उस हांडी को कोई डण्डा लेकर फोड़ दे तो दीपक का दर्शन हो जाएगा।

आवरण भजन

जब आत्म वृत्ति चलती है तो उस अज्ञान के पर्दे को समाप्त कर देती है। वृत्ति डण्डे की भाँति उस अज्ञान रूपी हाँडी को फोड़ देती है। अज्ञान को तोड़ देती है। ऐसा वेदान्त में कहा गया है। वृत्ति का ही ये सारा चक्कर है। वो आत्म रूप वृत्ति, अपने आत्मस्वरूप का निश्चय जो किया जाता है वो वृत्ति उस अज्ञान को तोड़ देती है। तो प्रकाशरूप होते हुए भी नजर आता है। तो प्रकाश का प्रकाश, परन्तु नजर नहीं अ हमारे को। आगे से आवरण आ गया बस। एवं आन स्वरूप है और हम दुःख में बैठे हैं। गुरुमहाराज जी उस दिन वचन निकला कि– **ये जीव सत्‌चित् आन स्वरूप है। इसमें दुःख का लेश भी नहीं है परन्तु इ दुःख खरीद कर लिया है।**

जब से अपना आप भुलाया।
तब से तुमने बहु दुःख पाया।।

अपने आपको भूल करके आप दुःखी हुए अपने आप में स्थित हो जाए तो दुःख का लेश भी नह अरे ! सूर्य में अंधकार है ? नहीं। कभी ठहर सकता तो आपमें दुःख है नहीं। दुःख हो सकता नहीं आप परन्तु भूल गया तो दुःखी हो गये, चिल्ला रहे हैं। दुः होकर के।

इस बब्बर शेर रूपी जीव को चाहना रूपी चूहे पकड़ लिया है। गुरु महाराज जी का वचन है चाहना रूपी चूहे ने पकड़ किया है। जीव बब्बर शेर परन्तु पकड़ा किसने है ? चाहना रूपी चूहे ने पक लिया तो दुःखी होकर चिल्ला रहा है। चाहना ने पक लिया है ये भी हो जाए वो भी हो जाए, वो भी हो जा ऐसा वैसा हो जाए, वो भी हो जाए। ऐसा–वैसा हो ज तो आनन्द स्वरूप होते हुए भी तू दुःखी हो रहा क्योंकि अज्ञान बीच में आ जाता है, उसके ऊपर पड़ गया है। जैसे प्रकाश स्वरूप के ऊपर पर्दा गया। सच्चिदानंद के ऊपर पर्दा पड़ गया है अज्ञ का। सत् भी नहीं मानता। कहता है मैं मरने वाला एक जैसा नहीं। ये तो फिर विचारवानों को ही समझ आता है कि मैं किस प्रकार एक जैसा हूँ, प्रकाशस्व हूँ, आनन्दस्वरूप हूँ।

सत् चित्त आनन्द रूप तुम्हारा।
साक्षी सृजणहारा प्रीतम प्यारा।।

हमारा तो रूप वो ही है। सच्चिदानंद स्वरूप गुरु महाराज जी ने ग्रंथ की शुरुवात यही से की है

तो सत्‌चित् आनन्द ब्रह्म है। ऐसा ब्रह्म सत्

आनन्द स्वरूप। वो ब्रह्म वो ही आत्मा है और वो ही तेरा स्वरूप है। गुरुदेव राजा शिखरध्वज को बता रहे हैं आत्मा कैसा है सत्‌चित् आनन्द स्वरूप है। ब्रह्म व्यापक । व्यापक की व्याख्या कर चुके हैं कि व्यापक है। सब जगह है। एक जैसा है। कहीं कम ज्यादा नहीं है, एक सा सब जगह व्यापक है तो–

नाम रूप का आधार

सत्‌चित आनन्द ब्रह्म व्यापक, नाम रूप आधार है।

नाम रूप का आधार है। विचार करना इस बात का कि नाम का आधार भी वो ही है और रूप का आधार भी वो ही है। वो न हो तो न नाम रहता है न रूप रहता । नाम रूप का आधार।

जो सुख नित्य प्रकाश विभु, नाम रूप आधार।
मति न लखे जिंहि मत लखे, सो मैं शुद्ध अपार।।

वेदान्त के विचार सागर ग्रन्थ के मंगलाचरण का पहला पहला दोहा है। नाम रूप का आधार है। कैसे नाम रूप का आधार ? इस शरीर में जब तक आत्म तत्व है, उसकी सत्ता है तब तक नाम रहता है। सत्ता नहीं रहेगी तो नाम गुम हो जाएगा। किसी का नाम राम तो राम बोलते हैं जब तक वो जीवित है। सत्ता निकल गयी, कोई उसको राम बोलता है बताओ ? विचार करना। बोलते हैं इस लाश को जल्दी उठाओ, इस शव को। प्राणी को जल्दी उठाओ। प्राणी को जलाकर आए हैं। ऐसा व्यवहार में आप देखते हो। कहते हैं प्राणी को जलाकर आए हैं। प्राणी के साथ गये शमशान घाट में। कोई पूछता है कहाँ गये थे ? किसी प्राणी के साथ गये थे। ऐसा नहीं कहते कि राम जलाकर आए हैं हम, नहीं लाश/प्राणी/शव को जलाकर आए हैं हम।

जैसे ही उसकी सत्ता निकली उसका नाम लाश/प्राणी/शरीर पड़ गया। खत्म हो गया नाम और रूप भी खत्म हो गया। अगर उसे दो–चार दिन बिना दवाई/बर्फ के रख दो तो देखो रूप उसका रहता है नहीं रहता। ऐसी बदबू होगी, ऐसा शरीर विकृत हो जाएगा कि कोई पास जाने के लिए तैयार नहीं होगा। जो रूप इतने बरस, जितने बरस वो जिया है ५०, ६०, ७०, ८० साल जितने भी बरस वो जिया है वो रूप बिगड़ता नहीं है। परन्तु जैसे ही इस शरीर से वो आत्म तत्व निकल गया ये शरीर बिगड़ना शुरु हो जाता है। ऐसा कहते हैं ७२ घण्टे उसको बिना बर्फ/बिना किसी दवाई के रख दिया जाए, गर्मी के दिन हो तो फट जाता है शरीर। कीड़े पड़ जाते हैं उसमें विचार करना कैसे ? और इतनी बदबू हो जाती है। कभी–कभी किसी प्राणी के आने में देर हो जाती है। या बाहर उसका शरीर शांत हो जाता है तो आने में देर हो जाए, कुछ हो जाए कितनी हो सेंट लगा दी जाए, फिर भी बदबू आती है। इतने बरस बदबू नहीं आ रही थी शरीर से। अब ऐसी हालत हो गयी है कि सामने भी खड़ा नही हो सकते। उस आत्म तत्व के निकलते ही रूप समाप्त हो गया। बदबू आनी शुरू हो गयी।

तो नाम रूप का आधार वो आत्म तत्व कैसा है ? नाम रूप का आधार, नाम पर काबू उसकी सत्ता के कारण है। अगर बालक मृत पैदा हो, उसका नाम रखेंगे बताओ। अगर गर्भ से मृत बालक जन्म लेवे तो उसका नाम नहीं रखा जाता। जीवित निकलता है यानी उसकी सत्ता लेकर पैदा होता है तो नाम है, सत्ता नहीं तो नाम भी नहीं। सत्ता है तो रूप है, सत्ता नहीं तो रूप समाप्त हो जाता है। इसीलिए गुरु महाराज जी ने लिखा है कि **नाम रूप का आधार है** नाम रूप का आधार है।

इन्द्रियातीत आत्मा

मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय अगोचार तीन गुणों से न्यारा है मन से भी न्यारा है, मन से भी अगोचर है। जो देखा न जा सके। जिसको पकड़ा न जा सके। जो बहुत दूर है उसको कहते हैं अगोचर। जो मन के द्वारा देखा न जा सके, मन के द्वारा भी जिसको पकड़ा नहीं जा सकता तो इन्द्रियों के द्वारा क्या पकड़ा जाएगा। वाणी का भी विषय नहीं और इन्द्रियों का भी विषय नहीं। मन, बुद्धि, वाणी, इन्द्रिय इन चारों बातों का ये आत्म तत्व विषय नहीं है।

गो गोचर जंहि लग मन जाई,
सो सब जानो माया भाई।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है जहाँ तक दृष्टि जाती है, जहाँ तक मन जाता है, जहाँ तक पहुँच जाओ, कितने ही ख्याली पुलाव बना लो, कहीं तक पहुँच जाओ आप, वो सब माया है ब्रह्म नहीं। मन माया का कार्य है। माया कारण है, मन कार्य है। तो मन की डोर माया तक जा सकती है। ब्रह्म तक नहीं जा सकता। जो जिससे पैदा हुआ है वो वहीं तक जा सकता है उससे दूर कहाँ से जाएगा। मन माया का कार्य है तो माया तक ही जा सकता है और किसी तक नहीं जा सकता। तो मन की पकड़ वहाँ तक नहीं है। माया तक पकड़ हो सकती है परन्तु ब्रह्म तक पकड़ मन की नहीं। विचार करना मन की पकड़ माया तक है ब्रह्म तक नहीं तो मन का विषय नहीं रहा ब्रह्म। मन और बुद्धि। मन जो संकल्प करता है बुद्धि उसका निश्चय करती है। बुद्धि का विषय भी नहीं है।

जाननहार इक आत्मा
मति न लखै जिंह मति लखे।

बुद्धि उसको जान नहीं सकती। बुद्धि प्रकाशित नहीं कर सकती। जो बुद्धि को प्रकाशित करता है, बुद्धि उसको नहीं जानती। बुद्धि को भी जो जानता है, मन को भी जो जानता है। मन को जानते हैं न हम। हम मन को जानते हैं। आज मेरा मन ठीक नहीं है। आज मेरा मन आनंदित है। आज सुखी हूँ, बड़ा आनन्द आ रहा है मन को। आज बड़ा दुःख है। दोनों बातें जानते हैं, मन के दुःख को भी तो सुख को भी। आज मेरी बुद्धि भ्रमित हो रही है, आज स्थिर है। आज मेरी बुद्धि में ये बात समझ में आ रही है। बुद्धि चल रही है। बुद्धि को समझ में नहीं आ रहा कि क्या इसका अर्थ है, क्या बात है। ये समझ में नहीं आ रहा मेरी बुद्धि को। बुद्धि को भी जानता है न। आज मेरी वाणी अच्छी है। खराब है। वाणी को भी जानता है। आज मेरी इन्द्रिया सबल हैं। निर्बल हैं। इन्द्रियों को भी जानता है। आँख में नजर कम है ये भी जानता है। कौन जानता है? कान में सुनायी कम देता है ये भी जानता है। हाथ–पैर पूरा काम नहीं कर रहे ये भी जानता है। सब जानने वाला है वो। तो सब जानने वाला है इसके द्वारा जाना नहीं जा सकता। ये तो है कि जहाँ पर इसकी डोर समाप्त हो जाती है वहाँ पर ही आत्म तत्व की सीमा शुरु हो जाती है। सब प्रयास जब छोड़ दिये जाते हैं।

मन गति भी ठौर न पावै

दौड़ सके तो दौड़ ले, जब लग तेरी दौड़।
दौड़ थका, दोखा मिटिया, वस्तु ठौर की ठौर।।

वहीं का वहीं है। सब जितना प्रयास करते हैं, प्रयास करते–करते जब थक जाएगें, जब वो प्रयास भी छूट जाएगा तब कहीं जाकर उस आत्मतत्व की प्राप्ति होती है। महात्मा बुद्ध को भी ऐसे ही प्राप्त हुआ। बहुत प्रयत्न किया। और जिस दिन छोड़ दिया, आखिरी दिन अपने आपको छोड़ दिया, सब प्रयास करना छोड़ दिया, उसी दिन उन्हें तत्व की प्राप्ति हो गयी। प्रयास काम नहीं करेंगे और बिना प्रयास भी उस तत्व की प्राप्ति नहीं होगी। याद कर लेना। प्रयास काम भी नहीं करेगा, प्रयास से उसकी उपलब्धि भी नहीं होगी। क्योंकि जब तक प्रयास नहीं किया, जब तक थका नहीं तब तक छोड़ेगा भी नहीं उसको। बहुत कम ही ऐसे लोग होते हैं जो सीधा छलांग मार जाते है। सीधा ही समझ जाते हैं कि हाँ ऐसी बात है। परन्तु ऐसी बात समझ में आती नहीं। प्रयास बहुत करता है व्यक्ति परन्तु जब प्रयास छूटता है तभी जाकर के उस तत्व की प्राप्ति होती है। मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय अगोचर है। और मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय जहाँ पर थक कर रूक जाती है वहाँ पर उस तत्व की प्राप्ति हो जाती है। तो ऐसा वो आत्म तत्व है विचार करना। सच्चिदानंद स्वरूप है, नाम और रूप का आधार है, मन, बुद्धि, वाणी, इन्द्रिय के द्वारा इसकी पकड़ नहीं होती। मन बुद्धि इन्द्रिय वाणी से दूर है जो ऐसा वो आत्म तत्व है। ये जो चार वचन सुने हैं इसका विचार करना। सत्गुरु महाराज, भगवान आपके ऊपर आशीर्वाद करेंगे कि आपके अन्दर भी आत्म तत्व जानने की प्यास जाग्रत हो जाए।

राजस्थानी भाषा में

१००८ आचार्याधीश श्री टेऊँराम जी चरितः

।। मंगलाचरण।।

दोहाः *वंदऊ हरि लछ पदम पद, मात पिता जग जात। तिमिर विरोहित जन हृदय, कर आलोक प्रभात।।*
मेघवर्ण रवि मुख हरी, शीश मुकट गल हार। मुख तन आँखि छवि पदम पद, लछ नम बारंबार।।

1. मैं इस ब्रह्माण्ड में जन्म लेने वाले चर अचर जीवों के माता पिता प्रातः वंदनीय श्री विष्णु के चरण कमलों की वंदना करता हूँ वे जन जन के अंधकार (अज्ञान) का हरण कर उनके जीवन में नये प्रभात का सूर्योदय लायें।
2. भगवान विष्णु मेघ वर्ण वाले सूर्य के समान जिनका मुख देदीप्यमान है जिनके शीश पर मुकट एवं गले में हार सुशोभित है एवं मां भगवती लक्ष्मी, जो पद्म छवि वाली है जिनका मुख आँख और तन पदम् वर्ण सुशोभित हो रहा है ऐसे भुवनपति विष्णु भगवान एवं मां लक्ष्मी के चरण कमलों की मैं बार–बार वंदना करता हूँ।

दोहाः *विघ्न हरण मंगल करण, वंदन देव गणेश।*
टेऊँ विउद वखाण मूं, अवतर जग दरवेश।।

चोपाई :

सिंध धरा मंजुल महतारी। संत ख्यात ख्याति बड़ भारी।।
खंडू गाँव सुंदर शुचि सोवे । सुर नर किन्नर मनड़ो मोवे ।।
चेलाराम भगत भगवाना अहनस राम नाम रत ध्याना।।
सतवत पतिव्रत कृष्णा नारी। भगती भगवत प्रतिदिन भारी।।
सत संगत पुनि साधु सेवा।चेला राम मुगती फल मेवा।।
इष्ट देव अरपण फल फूला। अरचण कृष्णा जग तर मूला।।
ऋषिकेश साधु पुर बारा। वीण तार झंकृत हिय तारा।।
कोइल कूक पपीहा पीहा। म[illegible] मोर जन अमरस पीहा।।
कृष्णा भाव सुवन इण जैसा। अक सरित फूल पदमा जैसा।।
चवदस दिन लग ताप कर भारी। अभिलासा पूरण हरि आरी।।

दोहाः *तुझ तप से मै प्रसन्न बड़, इच्छा पूरण जान।।*
सुत सूसंत समान शुभ, सकल गुणों की खान।।

चोपाई :

[illegible]स असाढ़ सेत पख प्यारा।ब्रह्म मूहरत दिन शनिवारा।।
[illegible]ष्णा गर्भ रतन अवतारा।चहु दिस में ऊजल उजियारा।।
[illegible]ष्ट गगन सिंधु सत निरते। विहग वृंद मधु रव मनु किरते।।
[illegible]द मधुर अमरत जल वरसा। खंडू–ग्राम जन गण सब हरसा।।
[illegible]म नाम नवजात उच्चारा। पुरजन परिजन भव सर पारा।
[illegible]ऊँराम सेव जग सारा । हिरद हार वन पुर जन प्यारा ।।
[illegible]म हँस हिय सर में वासा। ब्रह्म बाग हिय सिसु फुल वासा ।।
[illegible]रद पटल उगडी हरि रेखा।भाग पटल हरसित मुनि देखा।।

[illegible]हाः- *मुकट मणि संतन सुवन, मुनि मणि कुल वंस ।*
परम हंस चिति मानसर, टेऊँ चिन्मय अंस।।

चोपाई :

शुक सा बालक बड़ ब्रह्म ज्ञानी।बह्म ज्ञान चर्चा मित मानी ।।
बाल कुटि रचना सब साथी। ध्यान लीन हरि में दनराती।।
वन वागा तरूतल हरि ध्यानी। मधुर वचन पिक सा हरि बानी।।
कंठ कलित कै कोइल कूके। अमिय मेघ खंडू गर टूके।।
सामज्ञान दीपक जुप जानी। गरू कह पाठ वेद वस वानी।।
पोथी बह्म ज्ञान मन माना। हिरदे हार हरि हर बाना।
राम नाम को कल्प बिताना। कल्प वेल सत संगत ध्याना।
धन्य धन्य कृष्णा मा मानी। पुण्य फलित चेला जग जानी।।

दोहाः- *बाला पण में सिसु ऋषि, हरियल हिय पितु मात ।*
बीजांकुर भगती हरित, बूंटा सत लहरात।।

चोपाई :-

बाल खेल सिंध वर कूला। जल में वह खिल्लू तृण मूला।।
हाहाकार मचहू तह भारी। टेऊँ कूद जल सर बतियारी।।
खिल्लू फूल सरित तट लाया। परचो प्रथम जगत तह पाया।।
जाचक जिंसा बिन पण हाटा। बिना लाभ चीजा तुल काटा।।
टहल रीस जाँचई धन दूणा। परचो मात भ्राता मिल धूणा।।
टहल रीस बागा फल फूला। दुगुण लाभ मनड़ो बड़ फूला।।
संत संगत खेता सुख सारी। लडालून आंबा खग खारी ।।
संगत जाग तोड़ खल खारा। जिलाधीश चिनवा खल हारा।।

दोहाः- *सिद्ध पशु बलि देवता, गाँव ठोढ़नि माय।*
गुरू शब्द सुण प्रण सकल, पशु वध अब कुइ नाय।।

चोपाई :-

सालारे खंडू में भारी। शाह भिट्ट सत संगत सारी।।
रेला भजन सुणब नर नारी। चहु दिस टेऊँ जय जय कारी।।
प्रेम प्रकाश मंडल थप ताई। जस वासा जग में प्रसराई।।

गमण कराची पुर लरकाना। फिरि फिरि जोड़इ सब जन जाना।।
शिष्य बने लाखो नर नारी। धरम ध्वजा अबंर फहराई ।।
धर्म टेक भेद न तह नेकू। जैन बोध हिंदू सब ऐकू।।
ऐकर ग्राम खंडू के माई। श्वान वृद्धा घर अग मर जाई।।
हरिजन नेक न टेऊँ नेका। श्वान जीव पुनि मंत्रन फूका।।

दोहाः- *तीसा वरसा टेऊँ जी, जन्म स्थान कू त्याग।*
संत मंडली साथ ले , टंडे आदम भाग।
शिष्य मंडली साथ ले , शिव मन्दिर में वास।
पूजारी झगड़ो कियो, दूरा देश उजास।।

अमरापुर स्थापनाः-

दक्षिण दिश में गमण सुस्वामी। वन सुंदर पेखहू बड़ नामी।।
शाल शमी अरू कदमा कुंजा। वेल लिपट जूही फुल सजा।।
आश्रम सुंदर वह बड़ थापी। टेऊँराम बह्म जगती व्यापी।।
कुटिया सुंदर तहाँ रचाई। बाँस बल्ला पर कुश त्रण छाई ।।
सुदंर बाग लगायो ताही। फूल विगस अलि दल मंडराही।।
पंछी कल कल वंशी वीणा। अपसर गीत गाव मनु झीणा।।
बह्मज्ञान चर्चा नित ज्ञानी। सत संगत भजना मधु वाणी।।
टेऊँराम शब्दा रस मेहा। अमर सदन कुटिया घर गेहा।।
अमरापुर चर्चा जग भारी। दर्शन हित आवे नर नारी।।

दोहाः– *देखा देखी जल गया, अमरापुर किह नाश।*
प्रभ मंडल कुटिया मनु, चारूं मेर उजास।।
कूप सूख जल तहँ नहीं, चिंता सकल सताय।।
गुरू मंत्रन जल छिटकता, कुआँ जल भर जाय।।
सभा मौन भणि भव्य तहँ मंजुल मंजु विशाल।।
सत् संगत तहं अहनिशा सांझ सुबह मधुराल।।
दूर दूर सूं संत तह, भजन करण हित आय।
नाम कमायो अमरापुर, दुश्मन हियो जलाय।।

चोपाई :-

टंडाआदम हाको भारी। राम कृष्ण माने नहीं यारी।।
निंदादेव पुजारी याई। धर्म सनातन करई बुराई।।
खल दल चर्चा घर घर जारी। दुगुण नाम अमरापुर प्यारी।।
हियो विशाल टेऊँ महाराजा। धर्म पुंज धर्मन सिर ताजा।।
गौमुख नीसर शब्दा गंगा। अध्यातम मानुष सब रंगा।।
ठाठ बाठ अमरापुर भारी। देव सभा जाणग यह आरी।।
खल ज[illegible]ब ऐकठ हुई जाई। तहसीलदार कू जाय भूंडाई।।
तहसीलदार देखन आया। स्वामी जी को शीश नवाया।।
शिकायत तब खल जाई। कलेक्टर कू बात बताई।।
शासन दीन कुटी सब बालो। साधू संत गर्व सब गालो ।।

दोहाः- *खल कामा पामी सकल, आश्रम दीन जलाय।*
संत सकल दुख भर हिले, गुरूवर असरन काय।।
बोर झाड़ आँगन उसी, आसन दीन लगाय।
ध्यान कियो भगवंत को, मति फेरी खल जाय।।

चोपाईः-

अफसर आयो आगम पाई। मिनख रूप हरि जाणग आई ।।
आकर स्वामी कीन प्रणामा। कीन प्रणाम शीश नम वामा।।
पूछे आश्रम कौन जलाया। उत्तर गुरू तुझ दास जलाया।।
जिलाधीश बदली करी भाया। कलेक्टर तहँ नया लगाया।।
आश्रम पाछ चिनायो भारी। राज काज खरचो सुख सारी।।
आनन्द मंगल चहू दिश माई। चमत्कार लख सब हरसाई।।
भव्य भवन रच सुंदर वागा। तर सुन्दर बेला रस रागा।।
भजन दुगुण होबण वह लागा। गुरू पूजन सगला महभागा।।

दोहाः- *फूल वास जिम सब जगह, ख्यात टेऊँ सब ठोर।*
जाणग सिंध प्रदेश में, नव रवि ऊगो भोर।।

चोपाईः-

ठोर ठोर स्वामी जी जावे। दरसन हित नर नारी आवे ।।
सीख देय सब को महतारी। बह्म ज्ञान चर्चा कर भारी।।
पूर्ण प्रभाव गुरूवर भासा। जन जन शिष्य भणै सुख खासा।।
दर्श टेऊँ मनु दर्शन रामा। अवतर इस घर के घनश्यामा।।
शिष्य जान देवत मनुआया। आकर सबकू दरस दिराया।।
संत संगत हुय सांझ सकारी ।शाचिपति अमजल आय भरारी।।
गुर्जर धर गम गमन सुदिल्ली। तिमिर अज्ञान न टूटी झिल्ली।।
बाद गमण सुरवन पंजाबा। बह्म ज्ञान ऊजल उस आभा।।
कश्मीर गमण्हु या बड़ ख्याती। राजस्थान आ दिय हरि पाती।।

दोहाः- *सिंध सरित पारा हिका, नद में आय उफान।*
डगमग नावा करण लग, भय कंपित सब ज्ञान ।।
लेय कमंडल से सलिल, कीनइ मंत्रपूत।
जल छाटा छिटकत पलक, अंधड़ जल सब सूत ।।
सतनाम साक्षी शब्द, मूल मंत्र गुरू ज्ञान ।
ऐक दूज मिलते समय, याही मंत्र मुखान।।

चोपाईः-

एक सूत्र मणिया जिम माला। सकल साथ रहना हरि व्हाला।।
पापी साथ पा नहीं काई। बहकावा में भूल न आई।।
धर्म लक्ष्य सब भगवत पाना। झगड़ा पंथ भूल सब जाना।।
सकल धर्म अच्छा सुण भाई। किसी धर्म की नहीं बुराई ।।
पीड़ा पशु वध मांस न खाना। मद्य पान नह दुर्जन जाना।।
घात नहीं मित सत्य व्यवहारा। छल ठग कपट निकट नह प्यारा।।
मधुर बोल सब प्रेमी जानो । जीव प्यार जीवन उन जानो ।।
क्षमा करो अर शास्त्र सुज्ञाना। अन्न क्षेत्र सब ठोर खुलाना।।

दोहाः- *नहीं किसी दुख देवना, नहीं सताना कोय।*
पर पीड़ित सेवा सदा, धर्म न इण वद कोय।।

चोपाईः-

श्वेत वेश जब्बा सित धारी। देव दूत इण घर अवतारी।।
राम नाम मुख रवि मनु जाना। ब्रह्म ज्ञान आलोक पिछाना।।
ज्ञान किरण छन छन कर आना। वेद पुंज के नवतन माना।।
ध्यान लीन जोगीश्वर सीसा। दरस लोग सीधा जगदीशा।।
आचार्य प्रवर टेऊ जी काई। सुर नर ऋषि मुनि शीश नवाई।।
मंद मंद मुस्कावे मानो। नवल मेघ फूला जड़ जानो।।
मंच मंजु सोभे शुभ स्वामी। सुरगुर आव मोव मनु नामी।।
हनुवंत किंकर विड़द वरवाना। विड़द सिंधु टेऊँ जी माना।।

स्वर्गा रोहणः

दोहाः- ***काल एक दिन आवियो, लेग अमरपुर माय।***
अमरापुर बो अमरपुर, टेऊ सुरग सजाय।।

गुन्नीसो निनानवा, शुक्ल पक्ष शुभ साँस।
स्वामी टेऊँराम जी, सुरगापुर सत बास।।

आश्रम प्रेम प्रकाश वो, धन्य धन्य शुभ भाग।
सिंध सु हैदराबाद में, स्वामी उण घर राग।।

शनिवार था जनम दिन, शनिवार नस देह।
स्वामी टेऊँराम जी, बह्म सुपथ शुभ गेह।।

लख नर नारी अंतदन, दरसव अश्रु, आँखि झार।
अतंवेल निज हिय गुरू, वंदन बारंबार।।

गादीपत तह होविया, स्वामी सर्वानन्द।
बही बयार मंगल मधुर चार दिशा आनन्द।।

सर्वानन्द जु बाद में सोम्या सुरगा धाम।।
गादीपत होया तदे शांति प्रकाश सुधाम।।

प्रज्ञा चक्षु शांति जी हिरदे होय उजास।
बह्म ज्ञान विदवत सुबल, गुरूवर शब्दा भास।।

सोलह शिक्षा टेऊँ जी, मानख सिरजण साँच।
हनुवंत किंकर किह शब्द, बह्म रेख हिय रांच।

दोहाः- ***गादीपत हरिदासराम जी, जाणग बह्मानन्द।***
मंगल गोद ज चार दिस, जाणग परमानन्द।।
स्वामी भगतप्रकाशजी, गादीपत सब साज।
पुहजी पत सब संत जन, थाप ज रामहू राज।।

जयपुर अमरापुर का कवित

कवित

(१) *पावन पुनीत शुचि अमरापुर जु पुर।*
इंदर की राज सभा आंय ओप जानिए।।
धनपत धानी धन सदन कुबेर गिन।
भव्य भौन ऐसो नहीं जगत में जानिए।।
कंचन कलश तिन, रवि उग आयो दिन।
भगवा ध्वजा खग उड़, चांद छबि छानिए।
कह लो किंकर लिह, भव्यता को भव्य गेह।
युहप विमान धर, मणि मड़ मानिए।।

(२) *गुलाबी शहर इण गुलाब सुमन शुभ।*
अमरापुरा जु महल, शची भौन जानिए।।
विष्णु वसे है वास, लिछमी को साथ हास।
कंचन विलास लास, हेम हंस हालिए।।
फटिक शिला सो बन सेत सोन रास रास।
टेऊँजी मंदिर माना बह्म मणि मानिए।।
किंकर कह लो लिख, कैलाश मंदिर केघो।
बिरम मन्दिर केधो जैपर में जानिए।।

रचियता–**संत हनुवंत किंकर,** १७३, किंकर कुटीर,
जनता कॉलोनी, पाली (मारवाड़) राजस्थान

भाव के भूखे हैं भगवान

भाव का भूखा हूँ मैं बस, भाव ही इक सार है।
भाव से जो भजे मुझको, उसका बेड़ा पार है।।

भगवान भाव के भूखे होते हैं यह बात सार्थक है। भाव के द्वारा ही भगवान को हम प्रकट कर सकते हैं। हमारे सन्त महात्माओं ने भाव द्वारा ही भगवान के दर्शन किये हैं, एक सन्त थे बड़े ही मस्त–प्रभु परमात्मा में लीन रहले वाले, किसी भी चीज की चाहना न रखने वाले। नियम पूर्वक प्रतिदिन खड़े रहकर भगवान का भजन–संकीर्तन करते थे, और भगवान को रिझाते। आस–पास के व्यक्ति, सन्त जी से कहते, अरे भगवान तुम्हारे भजन संकीर्तन से प्रसन्न होने वाले नहीं, पर सन्त जी तो, अपनी मस्ती में मस्त। एक दिन आकाशवाणी हुई कि हे सन्त जी ! तुम्हारा भजन भगवान को स्वीकार नहीं है। पास में रहने वाले व्यक्तियों ने सन्त जी से कहा, देखा। भगवान को तुम्हारा भजन स्वीकार नहीं है। सन्त जी ने कहा ! भगवान ने इतना तो सुना कि कोई भक्त मेरा भजन कर रहा है। एक न एक दिन भगवान मेरे भजन को स्वीकार भी कर लेंगे। भगवान तो भक्त वत्सल होते हैं। ऐसा भाव मन में आ जाये तो भगवान के दर्शन अवश्य हो जाते हैं।

प्रातःकालीन प्रार्थना

गुरुधाम जयपुर

आशवन्दी गुरु तो दर आई

यह प्रार्थना स्वयं "आचार्य श्री" के मुखारविन्द द्वारा भगवान व गुरु के समक्ष की गई है। प्रतिदिन प्रातःकाल "आचार्य श्री" यह प्रार्थना किया करते हैं। प्रार्थना यानि अर्जी करना, याचना करना। मंगल व कल्याण कारक, सब विघ्नों का दूर करने वाली, तीन तापों को हरने वाली, दुःख–सुख में सहायक होती है प्रार्थना।

भगवान के दर पर की गई प्रार्थना अमंगल को मंगल बनाती है। प्रार्थना में तो अनन्त शक्ति होती है। प्रभु परमात्मा को रिझाने का सबसे सरल व सुगम साधन है प्रातःकालीन प्रार्थना ! प्रातःकालीन किये जाने वाला फोन की Line शीघ्र मिल जाती है। उसी प्रकार प्रातःकालीन की हुई प्रार्थना भगवान शीघ्र सुन लेते हैं। चाहे वो सांसारिक या परमार्थिक हो। प्रार्थना करने से संसार के दुःख, कष्ट, कलेश सब दूर होकर मन में अत्मिक सुख शान्ति की प्राप्ति होती है। एवं सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

पावन श्री अमरापुर धाम में प्रातःकालीन होने वाली प्रार्थना **आशवन्दी गुरु तो दर आई.....**

हे गुरु महाराज, मैं आपके द्वार पर आया हूँ, आश लेकर आया हूँ। आपके सिवाय इस संसार में कोई किसी का नहीं है। आप ही सबके पालनहार हैं। मेरे मन में अनेक विषय विकार भरे हैं। मन अशान्त रहता है। सदैव दुख के बादल मंडरा रहे हैं। हे प्रभु मेरे मन को शान्त करो। *–(क्रमशः)*

नोट :- आशवन्दी गुरु तो दरि आई.......... यह प्रार्थना गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान में प्रतिदिन प्रातः ७ बजे हुआ करती है। संसारी व्यक्ति घर परिवार के झंझटों को छोड़कर मन की शान्ति हेतु प्रातःकालीन इस प्रार्थना में शामिल होवे तो सारे दिन प्रसन्नता मिलेगी। मन में शान्ति रहेगी।

प्रातःकाल उठने के लाभ

(१) नेत्र ज्योति बढ़ना।
(२) स्मरण शक्ति बढ़ना।
(३) शरीर की तन्दुरुस्ती।
(४) मन को शान्ति मिलना।
(५) प्रभु चिन्तन में मन लगना।
(६) आध्यात्म के प्रति रूचि जागृत होना।
(७) सत्संग स्थल पर जाकर सत्संग अमृत की प्राप्ति।
(८) विवेक शान्ति बढ़ना।
(९) आत्मिक सुख की प्राप्ति का सुगम साधन है। प्रातः उठना।
(१०) मन का परमात्मा से मिलन।

संस्कार चेनल पर

प्रति रविवार करें सद्गुरु देव का सत्संग दर्शन

२३ फरवरी से १३ अप्रैल २००३ तक प्रति रविवार दोपहर ३ बजे संस्कार चैनल पर श्री अमरापुर धाम सहित, मुम्बई आश्रम से प्रारम्भ हुआ श्री प्रेम प्रकाश आश्रमों के महोत्सव व सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सत्संग-दर्शन का लाभ प्रेमी घर बैठे संस्कार चेनल के प्रसारण से प्राप्त कर सकते हैं।

पर्व महिमा

शिव-रात्रि-महिमा



'शिव' शब्द कल्याण और मोक्ष का का वाचक है इनको धर्मरूपी वृक्ष का मूल विवेक रूपी समुद्र को आनन्द देने वाले पूर्ण चन्द्र, वैराग्य रूपी कमल के खिलाने वालेसूर्य, पाप रूपी घोर अन्धकार के नाशक, त्रिताप(दैहिक, दैविक, भौतिक) हर्ता, मोहरूपी बादलों के समूह को नष्ट करने वाले पवन रूप, ब्रह्म कुलीन, कलंकशमनक, श्री रामभक्त आदि विशषणों से विभूषित किया गया हैं। ऐसे वृषध्वज महादेव जी को प्रणाम करके उनकी कृपा से शिवरात्रि महिमा का वर्णन करते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार भक्त वत्सलता वश त्रिदेव पाताल में राजा बलि को क्रम क्रम से चार चार माह तक दर्शन देते रहते हैं शिवरात्रि को शिवजी अपना क्रम (नम्बर) पूरा करके भूतल पर पधारते हैं इस पदार्पण काल को ही शिवरात्रि कहते हैं। शिवजी के आगमन स्वागत परम्परा के सन्दर्भ में हर्षसे भरकर मानव वर्ग इसे मानता है शिवजी भागवत धर्म के साक्षात स्वरूप है यथा **'वैष्णवां यथा शंभू।'**

शिवरात्रि को शैव और वैष्णव दोनों ही उनकी उपासना करने का व्रत (संकल्प) धारण करके शिव अभिषेक करते हैं यह परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है मानस में प्रमाण है कि त्रेता में श्री भरत जी ने सामान्य समय में भी अनिष्ट आशंका निवारण के लिये शिव अभिषेक किया था यथा **शिव अभिषेक करहिं विधि नाना** शिवरात्रि के शुभ अवसर पर समग्र भागवत वर्ग शिवाजी को गंगा जल में दूध मिलाकर स्नान कराते हैं और राम नाम लिखकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। लिंग का अर्थ लिंग नहीं है बल्कि सही अर्थ निशान चिन्ह, प्रतीक, स्वरूप आदि ही के लक्ष्य में है। इस सन्दर्भ में विचारणीय बात यह है कि शिवजी गंगा जी को विष्णु पादाम्बुजा समझकर ही सिर पर धारण करते हैं, फिर भला, उसे लिंग पर चढ़वाकर चढाने वाले से कैसे प्रसन्न हो सकते हैं, इसलिये लिंग का अर्थ स्वरूपादि ही अभीष्टित है। शिव जी को **आशुतोष तुम अवढर दानी** के रूप में कहा गया है विनय पद ४ में **दानी कहुँ संकर सम नाहीं** कहकर उन्हें छोड़कर अन्य से मांगने वाले को मूढ़ कहा है। ब्रह्म जी शिवजी की दान शीलता से हैरान होकर अपने पद से स्तीफा देने के लिये तैयार हो जाते हैं। यथा **यह अधिकर सौंपिये औरहिं, भीख भली मैं जानी।** इत्यादि बातें विख्यातित है भक्त जन उनसे भक्ति की भीख मांगते है यथा **तुलसीदास जाचक जस गावै विमल भगति रघुपति की पावै।** इत्यादि रूप से वर्णित है।

महादेव जी बड़े दानी है केवल हाथ जोड़ने से ही सबकी इच्छा पूरी करने वाले हैं। इनकी सेवा भी सस्ती है यथा **सेवा सुमिरन पूजिबौ पात आखत थोरे। दिये जगत जहँ लगि सबै, सुख, गज, रथ, घोरे।** आशुतोष शिव बेलपत्र और चावल से ही सब कुछ दे देते हैं। शिव जी भक्ति के आचार्य है इनकी कृपा के बिना राम भक्ति मिलना असम्भव है इसमें भगवान विष्णु ज़ी का कथन प्रमाणित है यथा **जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी = सो न पाव मुनि भगति हमारी** आदि मानसकार विनय पद ६ में तो यहाँ तक कह देते हैं कि **बिनु तव कृपा राम पद पंकज, सपनेहुँ भगति न होई, तब पद विमुख न पार पाव कोउ, कलप कोटि चलि जाहीं** इन उदाहरणों से सिद्ध है कि मनवांछित फल प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम शिवोपासना करना परम आवश्यक है।

शिवोपासको में श्री दशरथजी और जनकजी ही सर्वोपरि मान्यत है यथा **इन समकाहु न शिव अवराधें, काहु न इन समान फल लाधे। दशरथ सुकृत राम धरें देही, जनक सुकृत मूरति वैदेही।** शिवोपासना के फल से ही दशरथ के राम एवं जनकजी को वैदेही की प्राप्ति हुई थी, ऐसे फल किसने पाये, बाणासुर, कुबेर, रावण

आदि भौतिक सुख वांक्षा में ही बँधे रहने से ही गौड़ स्थानीय मान्यता हैं। सुधन्वा भक्त का सिर शिवजी की माला मे आद्यन्त पिरोया हुआ है **लोमष लखिस मरी की माला** लोमष का सिर भी मरे हुये भक्तो की गणना में शिव माला में देखा गया है। इन उदाहरणों से शिव उपासकों की भक्ति क्रमता और प्रियता का पता चलता है अहंकारी रावण श्री राम द्वारा मारा गया और अहंकारी बाणासुर की दो भुजायें छोड़कर शेष सभी भुजायें श्री कृष्ण द्वारा काटी गईं।

इसीलिये वृषध्वज को त्रयनयन, मयन--मर्दन महेस, अहंकर–निहार उदित दिनेस कहा गया है। शिवजी महान परोपकारी है यथा **उपकारी कोऽपर हर समान, सुर असुर जरत कृत गरल पान** इनके समान परोपकारी दूसरा कौन है, इन्होंने विष की ज्वाला से जलते हुये देव दानवों को बचाने के लिये विष पी लिया। अतः शिव चरित से हमें भी परोपकार की शिक्षा लेना चाहिये क्योंकि उपासना का सिद्धांत **देवो भूत्वा देवं यजेत** ही है। उप माने समीप और आसना स्थित होना अर्थात् उपासना द्वारा अपने उपास्य (इष्टदेव) में उनकी गुण धर्म शक्तियों में सामीप्य सम्बन्ध स्थापित कर तदाकारता को प्राप्त कर लेना अर्थात् अभेद सम्बन्ध हो जाये यही उद्देश्य है ।

आज मानव वर्ग का मन रूपी हाथी उपासना रूपी अंकुश के बिना मतवाला होकर मचल रहा है। अर्थ और काम पर धर्म का नियन्त्रण न होने से मर्यादा रहित इच्छाऐं पनप रही है, बहु संख्या में लोग दाम और काम सम्बन्धित वासना विमोहित होकर धर्म पथ से भ्रष्ट हो रहे हैं, कुछ लोग धर्म की ओट में चोट कर रहे हैं यथा **बंचक भगत कहाइ राम के, किंकर कंचन कोर हाम के** विनय पद १८४ का प्रमाण **दंभ, लोभ, लालच, उपासना बिनासिनी के** अतः हम सभी वितृष्णाओं को त्याग कर उपासना करें तभी सार्थकता है, उपासना की ओट में दम्भाचरण करना जघन्य अपराध है।

शिव रात्रि व्रत का यही रहस्य है कि हम शिव के समान संकल्प लें कि बुरे कर्मो से मुँह मोड़ कर सतकर्मोसे नाता जोडें जैसे शिवजी व्रत धारी है, श्री राम शरणागति व्रत धारी हैं, वैसे ही हमें भी सतकर्म और सद्भक्ति व्रतधारी होना चाहिये, यही शिव रात्रि व्रत का सही अर्थ है।

ॐ शिव संकल्पमस्तु

श्री सद्गुरू चरणारविन्द चंचरीक
सुरेश (साँवल) प्रेम–प्रकाशी
''प्रेम–प्रकाश–आश्रम'' मुरैना (म.प्र.)

पार्वती के तप से प्रसन्न हुये भगवान शिव

ज्योतिर्मात्र स्वरुपाय निर्मलज्ञान चक्षुषे।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंगभूतये।।

'ज्योतिमात्र जिनका स्वरूप है, निर्मल ज्ञान ही जिनके नेत्र हैं, जो लिंग स्वरूप हैं, उन परम शांत कल्याण मय भगवान शिव को नमस्कार है।

भगवान शिव के बारे में लिखा कि लिंग भूतये, यानि कि जो लिंगों में प्रकट होता है। क्योंकि भगवान शिव तो अजन्मा है। महाशिवरात्रि भगवान शिव का पार्वती के साथ विवाह हुआ वह कहलायी महाशिवरात्रि। माता पर्वती व भगवान शिव का मिलन कई हजार वर्षों की तपस्या के बाद हुआ। यह माता पार्वती वही हैं जो कि पिता के न बुलाये जाने पर भी यज्ञ में शामिल हुई और पिता के द्वारा अपमान होने के कारण यज्ञ विध्वंस कर देहत्याग दी और प्रण कर लिया कि इनके घर अब जन्म न लेकर मैं पर्वत राज हिमालय के घर जन्म लूंगी और शिवजी को प्राप्त करूंगी।

यहाँ एक कथा आती है कि एक बार सब देवतागण और तीनों त्रिदेव यानि कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभा में विराजमान थे सभा चल रही थी कि दक्ष प्रजापति सभा में पधारे और देवता नतमस्तक हुए भगवान शिवजी तो ठहरे तपस्वी। वे अपनी साधना में लीन, उन्हें क्या पता कि कौन आया, कौन नहीं आया। तो दक्ष प्रजापति समझ बैठे कि शिवजी ने मेरा अपमान किया है। मैं भी शिव को अपमानित करूँगा। उस समय उनके मन में ये बात आयी कि क्यों न यज्ञ करूँ और शिव को न बुलाऊँ, तो मेरा अपमान पूरा हो जाएगा। तो दक्ष प्रजापति ने यज्ञ करवाया और सब देवताओं को बुलाया पर शिवजी को नहीं बुलाया, जब यज्ञ वाला दिन आया तो शंकर जी तो माता सती को कथा सुना रहे थे कि इतने में सारे देवता कैलाश पर्वत के ऊपर से जा रहे थे। माता सती ने देखा तो पूछ लिया कि सारे देवता एक साथ कहाँ जा रहे हैं। शिवजी ने कहा कि सती तुम तो कथा सुनो, पर माता सती कहाँ मानने वाली थीं। जिद कर बैठी कि कथा मैं बाद में सुनूँगी। शिवजी मन में सोच रहे थे कि ये देवताओं को दूसरा

कोई रास्ता ही नहीं मिला कि सब जा रहे हैं। कैलाश के ऊपर ने शिवजी को बताना ही पड़ा कि ये बात हो गई दक्ष प्रजापति ने क्यों यज्ञ करवाया है। तब माता सती जिद करने लगी कि मैं भी जाऊँगी। भगवान शिव ने मना किया कि न जाओ पर सती माने तो न, तब शिवजी ने अपने गणों को साथ भेजा कि जाओ कहीं सती को क्रोध न आ जाये। उधर यज्ञ में दक्ष प्रजापति सबसे कह बैठे थे कि सती आए तो कोई स्वागत न करे। अपमान ही करे। माता सती ने जब देखा तो बहुत ही शर्मिंदा हुई कि मेरे ही घर इतना अपमान तो यज्ञ विध्वंस करने लगी और यज्ञ विध्वंस कर देहत्याग दी और प्रतिज्ञा ली कि अब उनके घर नहीं मैं पर्वत राज हिमालय के घर जन्म लेकर शिवजी को प्राप्त करूँगी।

ये सब देखकर दक्ष प्रजापति का अभिमान गया और शिवजी से क्षमा मांगी पर जो प्रण माता सती ने लिया वो नहीं दूर हो सकता है। वे काल पाकर हिमालय राज के घर में जन्मी और पर्वतराज की दुहिता होने के कारण पार्वती कहलायी। जब वो बड़ी हुई तो माता–पिता को उनके अनुरूप वर तलाश करने की फिक्र हुई। एक दिन अकस्मात देवर्षि नारद हिमालय राज के घर आ पहुँचे और कन्या को देखकर कहने लगे कि इसका विवाह तो शिवजी से होना है। वही इसके योग्य हैं यह जानकर कि जगन्माता सती ही उनके घर पैदा हुई है। तब हिमालयराज और उनकी पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा। एक दिन अकस्मात यात्रा करते माता सती का चिन्तन करते उसी स्थान में पहुँचे और गावतण में तपस्या करने लगे जब पर्वतराज को पता पड़ा तो वो पार्वती को साथ लेकर शिवजी को कहने लगे कि आप पार्वती की सेवा स्वीकार करें। पहले तो शिवजी ने उनकी सेवा को अस्वीकार किया। पर वो बाद में मान गये। अब तो प्रति दिन पार्वती अपनी सखियों को लेकर शिवजी की सेवा में आने लगी। जहाँ शिवजी बैठते वो स्थान झाड़ बुहारकर साफ कर देती और रोज पूजा अर्चना करती। यहाँ एक बात आती है कि त्रिभुवन सुन्दरी पार्वती के सेवा कराते भी शंकरजी के मन में कोई विकार नहीं आया तभी तो वो देव हैं वो तो अपनी तपस्या में ही निश्चल रहते ।

इधर देवताओं को तारकनाम का असुर बड़ा त्रास देने लगा। यह जानकर कि शिव पुत्र से ही इसका वध होगा। तो देवता शिव–पार्वती का विवाह कराने की चेष्टा कराने लगे तो देवताओं ने कामदेव को भेजा परन्तु कामदेव का पुष्पयुद्ध का पुष्पबाण भी शंकर जी के मन को विक्षुब्ध न कर सका, उलटे वह उनकी क्रोधाग्नि में भस्म हो गए। शिवजी ने वहां रहना अपनी तपस्या के लिए अन्तारायरूप समझ कैलाश की और चल दिये। और तप में लीन हो गये। माता पार्वती को शिवजी की सेवा से वंचित होने का बड़ा दुःख हुआ किन्तु उन्होंने निराश न होकर अबकी बार शिवजी को तप के द्वारा प्राप्त करने की मन में ठानी। माता मेनका ने तप के अयोग्य समझकर मना किया। इसलिए अनका नाम 'उमा' – उ+मा (तप न करो) नाम प्रसिद्ध हुआ, परन्तु पार्वती अपने संकल्प से तनिक भी विचलित न हुई और वहीं तपस्या करने लगी। जहाँ शिवजी ने तप किया था तभी से उस शिखर का नाम गौरी शिखर पड़ा। वहाँ उन्होंने पहले वर्ष तो फलाहार से व्यतीत किया और दूसरे वर्ष पर्ण (वृक्षों के पते) खाकर रहने लगी फिर उन्होंने पर्ण का भी त्याग कर दिया, इसलिए वे अर्पणा कहलायी। इस प्रकार उन्होंने तीस हजार वर्षों तक घोर तपस्या की जिससे कि बड़े–बड़े ऋषि मुनि भी दंग रह गए। अन्त में भगवान आशुतोष का आसन हिला। और पार्वती की परीक्षा लेने के लिए पहले तो सप्तऋषियों को भेजा और पीछे वटुवेश धारण कर पार्वती की परीक्षा के निमित प्रस्थान किया। जब शिवजी ने देखा कि पार्वती की उनमें अविचल निष्ठा है तब वो अपने आपको देर तक छिपा न सके। और अपने असल रूप में प्रकट होकर पाणिग्रहण का वरदान देकर अर्न्तध्यान हो गये। पार्वती अपने तप को पूर्ण होते देख घर लौट आयी और माता पिता को शिवजी का प्रकट होना और पाणिग्रहण का वरदान देना वृतान्त सुनाया। यह सुनकर माता पिता के आनन्द का ठिकाना न रहा। पीछे शिवजी ने सप्तर्षियों को विवाह का प्रस्ताव लेकर हिमालय को भेजा और नारद को देवताओं को कहने के लिए भेजा। इसी तरह वो दिन भी आया जब शिवजी की बारात ने हिमालय की ओर प्रस्थान किया। शिवजी की बारात थी अनोखी। दुनिया भर के भूत, पिशाच और शिवजी भस्मी जगाए नागमाला गले में पहने चल रहे थे सारे देवतागण भी, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, प्रभृति, आए हुई थे जब हिमालय राज के घर बारात पहुँची तो पहले तो पर्वतराज की पत्नी मेनका डर गयी और शादी में आनाकानी करने लगी पर जब भगवान विष्णु के कहने पर शिवजी ने सालह वर्ष की अवस्था का परमला वण्यमय रूप धरा जो कि करोड़ों कामदेवों को लजाने वाला था तो मेनका मान गयी और विवाह हुआ, हिमालय ने बडे चाव से कन्यादान किया। ब्रह्मा ने वेदोरक्त रीति से विवाह करवाया। सब देवताओं ने तथा भगवान विष्णु ने नाना प्रकार के उपहार भेंट किये इस तरह हर गौरी का विवाह सम्पन्न हुआ।

श्लोक : ***परस्परतपः सम्पत् फलायित परस्परौ।***
प्रपंच माता पितरो प्राञ्चौ जायापती स्तुभः।।

अर्थ :– एक दूसरे को प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या के फल में परस्पर मिलने वाले, समग्र संसार और निखिल प्रपञ्च के माता–पिता उन शिव पति और भगवती पार्वती पत्नी को हम प्रणाम करते हैं।

संकलन भोलाराम प्रेम प्रकाशी, जयपुर

भजनानंद

शिवरात्रि पर सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज व भगवान शिव का अनोखा संगम

तर्ज : पल पल यादि पवे थो..........

थलु : सत्गुरु टेऊँराम स्वामी शंकर, जो अवतार हुयो।

१. सूरत सुहिणो मन जो मुहिणो, मोहन मिठो मनठार हुयो।
जगन्दी ज्योति ब्रह्म जी जंहिंमें, विरिह वेराग वीचार हुयो।।

२. अन्दर ब्राहिर सादो सचलो, भगितीअ जो भण्डार हुयो।
पर उपकारी जत सत धारी, नाम नशे निर्वार हुयो।।

३. कर्म धर्म ऐं ज्ञान ध्यान जो, प्रेम कन्दड़ु प्रचार हुयो।
सभिनि शिष्यनि श्रद्धालुनि जो नित, राम ज्यां रखवार हुयो।।

४. राग द्वेष में दुःख सुख में सो, सदा **बसन्त** बहार हुयो।
हर मज़हब हर ज़ातीअ सां पिण, पूरो जंहिंजो प्यारु हुयो।।

सत्नाम साक्षी सिमरन कर लो जन्म सफल हो जाएगा - ३

(१) इन आँखों को आदत पड़ गई रोज बुराई देखन की।
इन आँखों से दर्शन कर जन्म सफल हो जाएगा–२

(२) इन कानों को आदत पड़ गई रोज बुराई सुनने की–२
इन कानों से सत्संग सुन लो जन्म सफल हो जाएगा।

(३) इस जीवा को आदत पड़ गई तू–तू मैं–मैं करने की
इस जीवा से सिमरन कर लो जन्म सफल हो जाएगा।

(४) इन हाथों को आदत पड़ गई रोज बुरे कर्म करने की–२
इन हाथों से सेवा कर लो जन्म सफल हो जाएगा।

(५) इन पैरों मो आदत पड़ गई रोज व्यसनों में जाने की
इन पैरों से मन्दिर जाओ जन्म सफल हो जाएगा।

"सत्गुरु भजन मण्डली"
गुरु नानक कॉलोनी, जयपुर

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर............

थलु : तोखे स्वामी टेऊँराम चवां,
या शंकर जो अवतार चवां।
तुंहिंजी अमरापुर कैलाश चवां,
या सुरग पुरीअ जो द्वार चवां।।

१. तोमें जोगिनि वारी जुगिती हुई,
ऐं भगत कबीर ज्यां भगिती हुई।
तोमें शेरनि वारी शक्ती हुई,
तुंहिंजी वीरनि वारी वृती हुई।
तुंहिंजी अनभइ वाणी अनंती हुई,
जा वेदनि जे सम सार चवां।।

२. तुंहिंजे राग में राज़ समायलु हो,
हर लुत्फ में साज़ समायलु हो।
तोमें निविड़त न्याज़ समायलु हो,
हर शख्स तव्हां दांहं मायल हो।
तुंहिंजे भजन में भाव समायलु हो,
तोखे भगितीअ जो भण्डार चवां।।

३. तूं ज्ञानिनि में वदो ज्ञानी हुएं,
ऐं ध्यानिनि में वदो ध्यानी हुएं।
गुणवाननि में गुणवानी हुएं,
निर्माननि में निर्मानी हुएं।
तूं दानिनि में वदो दानी हुएं,
तोखे दिलि घुरियो दातार चवां।।

४. तुंहिंजी सिन्ध सजीअ में साख हुई,
ऐं हिन्द पंजाब में हाक हुई।
जा **परमानन्द** खे प्यास हुई,
सा हर दिलि अन्दर खुवाहिश हुई।
तो में दातर वारी दाति हुई,
तोखे देह धणी दातार चवां।।

बड़े भाग मानुष तनु पावा

पूर्व जन्म के पुण्य के प्रताप से एवम् अकारण करुणा वरूणायल परमपिता परमात्मा की अहैतुकी कृपा से यह जीव तिरासीलाख निन्यानवे हजार नौ सो निन्यानवे मनुष्येतर योनियों की भयंकर पीड़ा को भोग कर ८४ वीं लाख इस सर्वश्रेष्ठ देव दुर्लभ योनि मनुष्य रूप में प्रकट हुआ है।

अतः इसी बात को ख्याल में रखते हुये, यह कहना न्याय संगत है कि यह मनुष्य शरीर बड़े भाग्य का प्रमाण है। लेकिन जीव की दुर्बलता तो देखो कहता है अरे ! भैया हमारे ऐसे भाग्य कहाँ ? यह कितना विवेक शून्यता का परिचय है कि इतने बड़ा भाग्योदय के पश्चात् भी वह कहता है कि मेरा भाग्य कहाँ ? अरे ! जिसके लिये देव भी करुणामय स्वर में परमात्मा से ऐसी उत्कृष्ट योनि के लिये प्रार्थना करते हैं और वो ही योनि परमात्मा की कृपा से हमें मिल गई है और हम कहते हैं हमारे भाग्य कहाँ ? नहीं ! नहीं ! परमात्मा ने तो अपनी तरफ से तो हमारा भाग्य खोल दिया है अब मनुष्य का कर्तव्य बनता है कि आगे के भाग्य का दरवाजा वो स्वयं पुरूषार्थ करके खोले ! इसके लिए भी भगवान ने उसे सब साधन दिये है, अब थोड़ी साधना करके परमात्मा के इस सर्वश्रेष्ठ उपहार का सदुपयोग करें।

हमें अपने मूल्य की जानकारी न होने के कारण हम दिन रात रो रहे हैं लेकिन संत् सद्‌गुरु, सत् शास्त्र, कृपा करके हमें अपने मूल्य की जानकारी निरन्तर दे रहे हैं, लेकिन मनुष्य की चेतना इतनी शून्य हो चुकी है कि वह उस और दृष्टि उठाकर देखता तक नहीं, जिससे उसका सारा जीवन निरर्थक सम्पन्न होता है।

एक व्यक्ति रोता हुआ एक संत के पास आया, बोलता है बस अब मैं संसार से बहुत दुःखी हो गया हूँ मेरा अब कोई मूल्य न रहा अब मैं मरना चाहता हूँ, मेरे पास अब कुछ भी न रहा ! संत ने कृपा दृष्टि से देखकर कहा–कि नहीं ! कौन कहता है कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं रहा ? अरे तुम्हारे पास अभी भी बहुत कुछ है। वो व्यक्ति कहने लगा नहीं। नहीं। मेरे पास कुछ भी नहीं है। मुझे मरने दो।

संत ने कहा–भाई ! तुम एक दिन के लिए मरने का निर्णय टाल दो और कल यहाँ आना ! मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या है तुम्हारे पास, उस व्यक्ति ने संत की बात को एक दिन के लिए मान लिया, और एक दिन के बाद पुनः संत के पास आया ! संत उसे एक राजा के पास ले गया। राजा से कहने लगा – राजन् ! इसकी एक आंख देनी है।

बोलो–क्या दोगे

राजा कहने लगा– एक आंख के दस हजार।

संत ने कहा यदि दोनों आंखे दे तो

राजा ने कहा फिर दोनों आंखों के बीस हजार।

संत ने फिर कहा–इसके हाथ भी देने है, बोलो कितना दोगे

राजा ने कहा–दोनों हाथों को भी बेचना है, कहो कितना दोगे, राजा ने कहा दोनों हाथों के भी बीस हजार। चलो इसके दोनों पैर भी बेचने है कहो कितना दोगे, राजा ने कहा दोनों पैरो के तीस हजार।

संत ने अंतिम सौदा करते हुए कहा–यदि इसका सारा शरीर दें तो राजा ने कहा फिर इसका मूल्य लाखों में होगा।

उस व्यक्ति ने जैसे ही राजा के मुख से ऐसा सुना आश्चर्य में पड़ गया।

"बाप रे। इतना सारा मेरे शरीर का मूल्य ? और मैं ऐसे ही बेवकूफों की तरह इधर उधर रोता रहा" बस उस व्यक्ति की आंतरिक चेतना जागृत हो गई, वह अपने जीवन का मूल्य समझ गया और उस संत के चरणों में गिरकर अपने आत्मोद्धार का रास्ता पूछा संत ने उसे कहा–पुत्र।

दोहा– ***सुत्रा सखणा को नहीं-समझे भीतर लाल।***
मूर्ख गांठ खोले नहीं, कर में हुआ कंगाल।।

वत्स तुमने आज अपनी गांठ खोल ली है, अपने इस शरीर के मूल्य को समझ लिया है अब तुम्हारा उद्धार निश्चित है। तुम संसार में सबसे भाग्यशाली हो। संत की यथार्थ वाणी सुनकर उसने साधना करके आत्म साक्षात्कार

कर उस परमधाम को प्राप्त कर लिया, जिसके लिए भगवान ने गीता के १५ वें अध्याय में कहा है।

श्लोकः– ***न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।***
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

अब यह तो रही उस व्यक्ति की कथा लेकिन हमारी कथा भी उससे भिन्न नही है हम भी उसी की नांई रो रहे है और अपने भाग्य को कोस रहे हैं। हमारी बेवकूफी भी कोई कम नही है।

अतः प्यारे सज्जनों। हम भी किसी संत सदगुरू की चरण–शरण पकड़कर अपना उद्धार कर लें और जो ऐसा नही करता उसे रोने के अतिरिक्त और कुछ भी हाथ नही आयेगा।

पूज्य गुरूदेव सतगुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज एक दिन सत्संग वार्ता के दौरान अपने श्री मुख से फरमा रहे थे–ओहो मनुष्य की यह कितनी न अज्ञानता व नासमझी है जो अपने बहुमूल्य श्वासों को ऐसे ही व्यर्थ के गप्पों में, निन्दा में चुगली में व्यर्थ की चेष्टाओं में ऐसे ही गंवाये जा रहा, यदि यह सारे जीवन भर की कमाई दे दे तो तो भी उसे एक श्वांस पुनः वापस नही मिल सकती और यह मनुष्य उसी बहुमूल्य पूंजी को ऐसे ही फेंकता जा रहा है अरे जब इसका हिसाब–किताब होगा फिर क्या मुख दिखायेगा क्या जवाब देगा?

भाई महापुरूष तो चेतना देते हैं परन्तु हमारी चेतना भी तो खुलनी चाहिये बस उस चेतना को जागृत करो अपने भाग्य को ठोकर मत मारो नहीं तो भाई यमराज के द्वारा भयंकर मारे जायेगें।

–प्रेमप्रकाशी दिलीप

इस तरह भक्त सुदामा ने अपनी बहन को दिया विदाई पूर्व अनमोल तोहफा

पत्र

सुदामा ने विदाई से पूर्व अपनी प्यारी बहन को एक कागज पर लिखकर कुछ सीख रूपी अनमोल तोहफा दिया।

बहना जब तुम ससुराल की दहलीज पर कदम रखोगी तो अपने साथ कई सपने लेकर जाओगी पर जब सपने यथार्थ की पथरीली धरती से टकरायेंगे तो तुम्हारे मन में कई असुरक्षा के भाव पैदा होंगे, लेकिन यदि तुम तय कर लो कि तुम्हें परिवार के सभी सदस्यों का दिल जीतना है तो यह नामुमकिन नहीं है। बस ध्यान देना कि किसी सदस्य के प्रति गलत धारणा न बने, न ही परिवार के किसी सदस्य के प्रति कटुता का व्यवहार रहे। एक बात गाँठ बाँध लेना कि दहलीज पर कदम रखते ही वहाँ पर पति ही नहीं बल्कि अन्य सदस्यों जैसे माता–पिता (सास–ससुर) भैया–भाभी (देवर–देवरानी) बहन (ननद) आदि के प्रति आदर व स्नेह का भाव रखकर उनसे जुड़ने की कोशिश करना, जिससे तुम्हें वहाँ पर अकेलापन महसूस नहीं होगा। घर गृहस्थी के काम–काज से बिल्कुल जी मत चुराना और अपनी क्षमता के हिसाब से काम करके सबका दिल जीतना। यदि किसी वजह से थोड़ा काम ज्यादा भी करना पड़े तो माथे पर बल मत लाना और न ही इसका एहसान जताना सम्भवतः कोशिश करके घर के बड़ों की आज्ञानुसार काम करना। जिससे उन्हें खुशी होगी व तुम उनकी आँखों का तारा बनकर रहोगी। वैसे भी हमारे प्यारे सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज अपने प्रवचनों में फरमाते हैं कि :–

माता-पिता, गुरू, प्रभु की वाणी।
बिन विचार करिए शुभ जानी।।

अर्थात् माता हो, पिता हो, गुरू हो या फिर अपने से बड़ों की आज्ञा में अपना विचार नहीं डालना चाहिए। उसे मानना चाहिए। क्योंकि ये सभी हमारे परम हितैषी है ये हमारा बुरा स्वपन में भी नहीं चाहते। इतना करने पर देखना वे सभी सदस्य अपने को भूल कर तुम्हारे व्यवहार के कायल होंगे और दूसरों को भी तुम्हारी मिसाल देंगे।

राजू ठकुरेल, संदेश प्रतिनिधि इन्दौर

स्त्री के दिव्य भूषण

श्रीमद्भगवद गीता के दसवें अध्याय में अर्जुन श्री
ष्ण भगवान से पूछते हैं कि आप किन–किन भावों में मेरे
ारा चिन्तन करने योग्य हैं और मैं किस प्रकार निरन्तर
न्तन करने योग्य हूँ और मैं किस प्रकार निरन्तर चिन्तन
रता हुआ आपको जानूं ? इस प्रश्न के उत्तर में भगवान
अपनी परमेश्वर्यरूप विभूतियों का विस्तारपूर्वक वर्णन
या है, भगवान कहते हैं कि जो–जो विभूतियुक्त अर्थात
श्वर्ययुक्त कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है उसको तू
रे तेज के अंश से ही उत्पन्न हुई जान।

इस अध्याय के एक श्लोक की हम यहाँ चर्चा करेंगे
गवान कहते हैं–

ीर्ति श्री र्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृति क्षमा अर्थात् स्त्रियों
कीर्ति श्री वाच स्मृति, मेधा, धृति एवं क्षमा है पहली बार
हाँ भगवान ने स्त्रियों का उल्लेख किया है अगर स्त्री में
रमात्मा की झलक पानी हो तो इन उल्लेखित गुणों में पाई
ा सकती है।

कीर्ति- कीर्ति से भगवान का तात्पर्य यहाँ आधुनिक
ग के यश अथवा मान बढ़ाई से नही हैं अपितु कीर्ति तो
नसे बहुत ऊँची उपाधि है कीर्ति एक आंतरिक गुण है एक
तरी सौन्दर्य है। इस गुण को थोड़ा समझने की जरूरत है
से पुरूषों में ब्रह्मचर्य फलित होता है वैसे ही स्त्रियों में
ीर्ति। जब स्त्री के सौन्दर्य की
वस्था किसी दूसरे के लिए नहीं
ल्कि परमपिता परमेश्वर के लिए हो
उसके व्यक्तित्व से वासना की
कार न निकले तब स्त्री को एक
ूठा सौन्दर्य उपलब्ध होता है, वो
न्दर्य उसकी कीर्ति है उसका यश

पुराने ऋषियों ने नववधूओं
आशीर्वाद दिए हैं जो आज के
में बड़े अजीब लग सकते हैं।
लिखित है कि तेरे दस पुत्र हों
अंत में तेरा पति तेरा ग्यारहवां
हो जाए और कहा है– कि जब
पति पुत्र न हो जाए तब तक
ना कि तूने स्त्री की परम गरिमा
को प्राप्त नहीं किया। जिस गुण से जिस आंतरिक धर्म से
पति पुत्र हो आए उसका नाम कीर्ति है गहरी साधना से
स्त्री में कीर्ति के फल फूल लगते हैं उसके मन में जितनी
तीव्रता से मातृत्व का भाव गहन हो आए वो पूरे जगत की
माँ हो जाए। उसके मन में एक ही भाव तरंगित हो, माँ होने
का स्त्री होने का पत्नि होने का भाव छूट जाए तब उसमें
एक दिव्य तेज आता है जिसका नाम कीर्ति है।

श्री– स्त्री गुणों की चरम सीमा है जब कीर्ति
फलित होती है तब श्री का जन्म होता है। कीर्ति में तो स्त्री
को यह बोध रहता है कि मैं स्त्री हूँ पर श्री को प्राप्त स्त्री
में स्त्री पुरूष में कोई भेद नहीं रह जाता वो दिव्य हो जाती
है। ब्रह्मज्ञानी हो जाती है। वैदिक युग में मैत्रेयी, गार्गी आदि
देवियां ब्रह्मविचार में ऋषितुल्य हो गयी थीं। सहस्त्र वेदज्ञ
ब्राह्मणों की सभा में गार्गी ने गर्व के साथ याज्ञवल्क्य को
ब्रह्मज्ञान के शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया था।

वाक– हम सभी प्रायः देखते है कि स्त्रियों में बातचीत
की आदत बहुत होती है ऐसा लगता है कि जैसे बातचीत ही
उनका धन्धा हो पर यहां भगवान का वाक से तात्पर्य उनकी
अधिक बोलने वाली प्रवृत्तियों से नहीं अपितु उस वाणी से है
जो मौन की मिठास चखकर निकलती है। वाक तब प्रकट
होता है जब स्त्री परम मौन को उपलब्ध हाती है, तब उसकी
वाणी वाणी नहीं रहती बल्कि ऋचाएं
बन जाती है स्त्री परम मौन को
उपलब्ध होती तब उसकी वाणी वाणी
नहीं रहती बल्कि ऋचाएं बन जाती
है स्त्री का गुण उसका चुप होना ही
इतना चुप होना कि लगे उसके पास
वाणी ही नहीं है हमारे सदगुरू स्वामी
सर्वानन्द जी महाराज ने भी मौन
पर बड़ा जोर दिया है वे कहते थे
कि दुनियां में चुप जैसी मीठी वस्तु
और कोई नहीं है।



स्मृति– स्त्री और पुरूष में
भिन्न प्रकार की स्मृति होती है पुरूषों
में स्मृति बौद्धिक होती है, पर स्त्री
में स्मृति केवल बुद्धि तक ही सीमित
नहीं होती बल्कि अस्तित्वगत होती

है स्त्री अगर किसकी याद करती है तो बुद्धि या विचार से नहीं पर अपने दूर होने से स्त्री की स्मृति उसके रोम रोम में समाहित होती है, जैसे हम एक माता पुत्र का उदाहरण लें, माता के लिए पुत्र उसका ही फैला हुआ अंग है अगर पुत्र किसी तकलीफ में होता है तो भले ही वह शारीरिक रूप से माता से दूर हो पर फिर भी माता का हृदय कांपने लगता है ये एक तथ्य है जिसे वैज्ञानिकों ने परीक्षण द्वारा साबित किया है पिता को हम एक औपचारिक संस्था मान सकते है, पिता न भी हो तो चलेगा पर माँ का होना अति आवश्यक है।

ऐसी ही स्मृति से अगर ईश्वर को याद किया जाए बुद्धि से नहीं, विचार से नहीं, वाणी से नहीं पर अपने पूरे होने से, अपने रोम रोम से याद करना ही न पड़े वो हमेशा याद रहे तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि भगवान हमसे दूर नहीं जब भगवान को ऐसी स्मृति से याद किया जाता है तो याद करने वाला इन्सान इन्सान नहीं रहता भगवान बन जाता है भगवान कहते हैं स्त्रियों में मैं स्मृति हूँ।

धृति– किसी भी प्रकार के दुख विपत्ति, कष्ट, और भय के समय भगवान के मंगलमय विधान पर भरोसा रखकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मैदान में डटे रहना धीरता है ऐसा कहा जाता है जहाँ तक सहनशीलता धैर्य, स्थिरता का सवाल है स्त्री पुरुष से ज्यादा शक्तिशाली है।

क्षमा– अगर प्रेम, धैर्य, मातृत्व होगा तो क्षमा ... ही घटित होगी। इन गुणों के विकसित होने पर ही स्त्री स्त्री कहलाने योग्य होगी वर्तमान शिक्षा का एक बड़ा दो... यह है कि स्त्रियों में नारीत्व और मातृत्व का नाश होक... उनमें पुरुषत्व बढ़ रहा है, आजकल की स्त्रियाँ कोशिश क... रही हैं, पुरुषों जैसा हो जाने को अपने उन्नति का मा... समझती हैं। पर किसी भी प्रकार की उन्नति तभी तक सह... हैं जब तक वह पवित्र जीवन और सतीत्व को अक्षुण्ण बना... हुए है। स्त्री कभी पुरूष तो बन नहीं सकती, बनेगी भी तो... दूसरे नम्बर की, तो बताइए कि दूसरे नम्बर की पुरूष बनन... अच्छा या पहले नम्बर की स्त्री। इसीलिए भगवान ने ... बहुत उचित किया है कि स्त्रियों के गुण अलग से गिनाए... आजकल स्त्रियों के इन गुणों का बहुत तीव्र गति से ह्रास हो... रहा है इस युग में सर्वाधिक चोट जिसके गुणों को पहुँची है... वो स्त्री है शायद इसके परिणाम बहुत ही भयानक हो... क्योंकि सभी पुरूषों को स्त्री से ही जन्म लेना पड़ता है... भगवान के इस श्लोक पर हम अगर विचार करेगें तो हमार... अवश्य कल्याण होगा। हमें भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए... कि हम सावित्री, संघमित्रा, अहिल्याबाई, मीराबाई, आदि... भारत की महान देवियों द्वारा चलायी गई परम्परा को आगे... बढ़ा सकें।

प्रेम प्रकाशी **पूजा**, लखनऊ

अनुभूत नुस्खे

बुखार

बुखार दवाई से ठीक हो जाता है यह सब जानते हैं परन्तु घरेलू इलाज से भी एक दिन में या ३ दिन में बुखार उतर जाता है। किसी भी समय डॉक्टरी सहायता तुरन्त न मिलने पर आप यह घरेलू नुस्खे अवश्य प्रयोग करें। शर्तिया लाभ होगा।

(१) गर्मी के मौसम में कैसा भी बुखार हो तब तुलसी पत्ती ११, काली मिर्च ७, ६० ग्राम पानी में मिक्सी में पीस कर व छान कर सुबह शाम पिला दें। **तीन दिन में बुखार** उतर जायेगा।

(२) बरसात व सर्दी में **तुलसी पत्ती ११**, ७ नग काली मिर्ची, १२५ ग्राम पानी में डाल कर उबालें, मिर्च कूटकर डालें, जब पानी आधा रह जाय तब छान कर रोगीको पिला दें। बालक को आधी खुराक दें व १२ साल के कम उम्र के बच्चों को ३ तुलसी पत्ती, २ काली मिर्च, १० ग्राम पानी में पीस कर दें। मीठे के बिना काम न चले तब १० ग्राम मिश्री चूरण डालें। २ दिन से ७ दिन तक पिलावें।

(३) ७ पत्ती तुलसी, ७ काली मिर्च, ७ बताशे, तीन कप पानी में डाल कर उबालें। एक कप रह जाने पर गर्म गर्म पीकर बदन ढक कर १० मिनट लेट जायें।

यह दवा बुखार, मलेरिया, सर्दी–जुकाम के लिये रामबाण है। दिन में दो बार प्रातः व रात सोते समय २–३ दिन पीयें।

(४) रात में या रविवार को बुखार हो जाय। रात में व रविवार को तुलसी पत्ती नहीं तोड़ी जाती है। तब नीबू के दो भाग कर दोनो में काली मिर्च व सैंधा नमक (न हो तो साधारण नमक) ऊपर भुरक कर माचिस की काडी उलटी (मसाला के दूसरी साईड) से चुभो चुभो कर नमक मिर्च को नीबु में भीतर भर दें। तब उसे तवे पर हल्का गरम कर चूसने से बुखार में अच्छा लाभ होता है।

(५) २० नग मुनका धोकर बीज निकाल कर २५० ग्राम पानी में रात में भिगा दें। प्रातःकाल उसी पानी में मुनका को उबाल दे व मुनका खा जायें, पानी पी जायें। बुखार ३ दिन में उतर जायेगा।

–**कृपालदास सुगनोमल गुलवानी**, भिलाई

काव्यांश

"उठ भोर भई त्यागो निद्रा"

उठ भोर भई त्यागो निद्रा,
अब ईश–भजन की बेला है।
प्रभु परमेश्वर में ध्यान लगा,
जो सच्चा सखा सुहेला है।
शुद्ध शीतल सुन्दर सुगन्ध भरी,
वायु चलती आनन्द भरी।
देखो उषा ने गगन मण्डल पर
डाला खूब उजेला है।
पशु जागे पक्षी चेते हैं,
गुणगान करें जगदीश्वर का।
तू भी उठ जाग प्रभु का गुण गा,
बना आलस का क्यों चेला है।
मानव का चोला है तेरा,
ईश्वर भक्ति से सफल बना।
प्रभु भक्ति बिना यह चोला भी,
इक मट्टी का ही ढेला है।
धन जन बल तन ना साथ चले,
शुभ कर्म कमा इस चोले से।
आया था अकेला दुनियाँ में,
जाना भी तुझे अकेला है।
ऐ बन्दे सोच विचार जरा,
मोह–माया में क्यों फँसा रहा।
यह बात सदा रख सम्मुख तू,
यहाँ चार दिनों का मेला है।
'सेवक' ऋषियों के सत्संग से,
तू आत्मा अपनी शुद्ध बना।
जप–तप से जीवन को चमका,
और झूठा छोड़ झमेला है।

प्रेषक : ***इन्द्रचन्द लाला***
प्रेम प्रकाशी, अमरापुरा, जयपुर

गुरू अपने चरणों में हमें स्थान दे दो।

तुम्हे भूले कभी न इतना वरदान दे दो।
अपने श्री चरणों में हमें स्थान दे दो.......
किसी भी हाल में हो, करे चिंतन तुम्हारा
इतना उपकार कर दो न भटके मन हमारा–२
मेरी अँखियों को तेरी मधुर मुस्कान दे दो–२
तुम्हें भूलें कभी न इतना वरदान दे दो। गुरू तेरे ......
जहाँ भी जाय हमको, मिले तेरे दीवाने
सभी मस्ती में झुमें, गायें तेरे तराने – २
हमारे कण्ठ स्वर को तुम्हारा गान दे दो–२
तुम्हें भूलें कभी न इतना वरदान दे दो। गुरू तेरे ......
तुम्हारी ही खुशी में हमारी ही खुशी हैं।
नहीं चिंता सताये न कोई बेबसी हो – २
मनोबल को बढ़ाके ऐसी पहिचान दे दो – २
तुम्हें भूलें कभी न इतना वरदान दे दो। गुरू तेरे ......
तुम्हारा दास गुरूवर करे अरदास तुमसे
जो टूटे न कभी भी, करलो वो रिश्ता हमसे-२
तुम्हारे ही कहायें बस ये सम्मान दे दो - २
तुम्हें भूलें कभी न इतना उपकार कर दो। गुरू तेरे.....

रेनु माखीजा, सिवनी

सत्गुरू को भुला दिया मोह माया को जगा दिया

सत्गुरू को भुला दिया मोह माया को जगा दिया,
हाय रे बन्दे तूने ये जीवन क्यों बरबाद किया।
बड़े भाग्य से है तूने ये मनुष्य चोला है पाया,
एक दिन मिट्टी में मिल जायेगी तेरी ये झूठी काया।
अंत समय में तेरा न होगा कोई संघी साथी,
ले ले शरण सत्गुरू की संवर जायेगी तेरी जिंदगी बाकी।

सत्गुरू को भुला दिया......

दो चार दिन की ये है जिन्दगानी प्रभु की है ये मेहरबानी,
करता जा तू जग भलाई वाही-वाही होगी सबकी जबानी।
हर तरफ सत्गुरु की तस्वीर होगी,
उनके चरणों में ही तेरी तकदीर होगी।
प्रभु को कभी तू भुला न देना,
अपने आप को मोह माया में फंसा न देना।

सत्गुरु को भुला दिया......

जब तेरी अंतिम तैयारी होगी तुझे अकेले ही जाना होगा,
ऐसी करनी करता चल कि दुनियां कहे कि तुझको दुबारा आना होगा।
गुलाब के फूलों की तरह जग में अपनी खुशबू फैला देना,
जग में मरकर भी जीना, तुम सबको सिखा देना।

सत्गुरु को भुला दिया......

कंचन और माया होगी सदा ही तेरी दुश्मन,
महकता रहेगा फिर भी तेरा ये चंचल मन।
सत्गुरु की शरण में आकर खुद को भुला देना,
जीते जी इस कंचन माया को हमेशा के लिये भुला देना।

सत्गुरु को भुला दिया......

राजू गुरनानी, भीलवाड़ा

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा - स्वर्ण जयन्ती समारोह

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के कोटा आश्रम के पचास वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में कोटा के ''श्री प्रेम प्रकाश आश्रम'' का स्वर्ण-जयन्ती समारोह एक विशाल सन्त समागम के रूप में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पुण्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में सन्त मण्डली के साथ बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, जिसके उपलक्ष्य में श्री प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा एवं पूरे शहर भर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम रखे गये, आईये, लेखनी के माध्यम से हम सभी भी सम्मिलित होवें, इस महायज्ञ में–

यह मेला दिनांक ८–१२–०२ को सुबह ७ बजे से प्रारम्भ हुआ, इस दिन मंगल मूर्ति प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन–चरित्र व स्वामी जी की अन्य प्रकाशित पुस्तकों के लेख व दोहों पर आधारित कई प्रतियोगिताएँ आयोजित व संचालित की गईं जो इस प्रकार थी :–

१. **सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चित्र में रंग भरो**
२. **श्लोक - स्मरण प्रतियोगिता**
३. **हिन्दी - सिन्धी प्रतियोगिता**
४. **स्मरण - शक्ति प्रतियोगिता**
५. **जीवन - चरित्र एलबम व निबन्ध प्रतियोगिता**

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्र व लेख चित्रावली पर आधारित इन प्रतियोगिताओं में कोटा शहर के समस्त विद्यालयों से हजारों की संख्या में छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता को संत श्यामलालजी, चन्द्रप्रकाश खूबचन्दानी, कन्हैयालाल छाबड़ा व प्रेम प्रकाश सेवा मण्डल के सहयोग से सम्पादित किया गया। दिनांक १०–१२–२००२ को प्रातः ७ से ६ बजे तक सतसंग हुआ व ६ बजे से श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भागवत गीता के पाठों का आरम्भ किया गया, सांय ५ से ७ बजे तक सत्संग वर्खा हुई।

दिनांक ११–१२–२००२ बुधवार प्रातः ६ बजे हजारों की संख्या में प्रेमीगण स्टेशन पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का स्वागत करने पहुँचे। जैसे ही रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर आई, संत श्यामलाल सहित समस्त प्रेमी गुरुदेव भगवान की जय–जयकार करने लगे, स्टेशन पर पूज्य गुरुवर एवं सन्त मण्डली में सन्त जयदेव (दिल्ली), सन्त दया प्रकाश (जयपुर), सन्त शम्भूलाल (इन्दौर), सन्त मोनूराम (जयपुर), सन्त नन्दलाल (हरिद्वार), सन्त हीरानन्द (जयपुर), सन्त नामदेव (लखनऊ), सन्त शंकरलाल (धुलिया), सन्त नरेशलाल (इन्दौर) व सन्त विद्यार्थी मण्डली सहित पूरे भारत वर्ष से हजारों की संख्या में सन्त व प्रेमीगण कोटा शहर पधारे व मेले की शोभा बढ़ाई, स्वागत सत्कार में स्टेशन से निकलने में काफ़ी समय लग गया, कोटा स्टेशन से आश्रम तक बीच में कई स्थानों पर स्वामी जी एवं सन्त मण्डली का धूम–धाम से स्वागत किया गया।

सुबह १० बजे आश्रम में सेवा–मण्डल एवं प्रेमीयों द्वारा स्वर्ण–जयन्ती समारोह पर रक्त–दान शिविर का उद्घाटन स्वामी जी द्वारा किया गया, जिसमें २७ लोगों ने रक्त–दान किया। दोपहर ३ बजे स्वामी जी के कर–कमलों द्वारा विज्ञान–नगर कोटा के सिन्धी युवा महोत्सव का उद्घाटन एक विशाल रैली के साथ किया गया।

सांय ५ से ८ तक आश्रम में सत्संग–वर्खा हुई, जिसका समस्त प्रेमी व भक्तों ने आनन्द उठाया। दिनांक १२–१२–२००२ प्रातः ७ से १० बजे तक सत्संग वर्खा पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली के द्वारा की गई।

प्रातः १०.३ बजे यज्ञोपवीत सामूहिक जनेऊ संस्कार का आयोजन किया गया, जिसमें ७५ बालकों का सामूहिक उपनयन संस्कार हुआ इसमें प्रत्येक कार्यक्रम की व्यवस्था अलग से की हुई थी, जैसे यज्ञोपवीत, भोजन प्रसादी। इस अवसर पर स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली द्वारा रंगारंग भजन संगीत कार्यक्रम हुआ, प्रत्येक

नेवाधारी ने अलग से एकरूपता लिये हुए वेषभूषा पहनी हुई थी जो कि कार्यक्रम व आश्रम की समस्त व्यवस्था सम्भाले हुए थे। स्वामी जी द्वारा प्रत्येक बालक को आशीर्वाद रूप में पाखर पहनाई गई।

सांय ५ से ८ बजे तक हुई सत्संग वर्खा में स्वामी जी द्वारा स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जीवन गाथाएँ लीलाएँ सुनाकर समस्त धर्म प्रेमियों को आनन्दित कर दिया गया।

दिनांक १३–१२–२००२ को प्रातः ७ से १० बजे तक प्रेमियों द्वारा सत्संग का रस–पान किया गया।

प्रातः १०:०० बजे पूज्य स्वामी जी द्वारा स्वामी टेऊँराम गरीब सहायता समिति के द्वारा बाँटा जाने वाले अन्न क्षेत्र के साथ स्वामी जी के द्वारा कम्बल व उपयोगी सामग्री वितरित की गई।

प्रातः १०:३० बजे सिन्धु सोशल सर्किल कोटा द्वारा लगाए गये विभिन्न रोगों की निःशुल्क जाँच शिविर का उद्घाटन पूज्य स्वामी के शुभ हाथों से हुआ।

प्रातः ११:०० बजे श्री कृष्ण मुरारी गौशाला दादाबाड़ी स्वामी जी एवं सन्त मण्डली द्वारा सत्संग वर्खा की ई एवं गोवंश की रक्षा करने के लिए तन–मन–धन से वा करने का उपदेश देते हुए कहा कि "गाय माता की रह ही पूजनीय हैं, जिसकी पूजा भगवान श्री कृष्ण ने की थी, इसीलिए गाय बहुत पूजनीय है व इसका आदर करना चाहिए। उस समय सद्गुरु महाराज व अन्य प्रेमियों द्वारा लगभग २५०००/– का आर्थिक सहयोग गौशाला को दिया गया। उसके बाद १ बजे स्वामी ज़ी द्वारा दादाबाड़ी में एक दुकान का उद्घाटन किया गया एवं ३ बजे स्वामी टेऊँराम आलोक स्कूल की नई इमारत का शिलान्यास किया गया।

सायं ५ से ८ बजे तक विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वालों को पुरूस्कार प्रदान किये गये व सत्संग वर्खा हुई एवं संत श्यामलाल द्वारा लगभग ४०० बच्चों को पुरूस्कार भी प्रदान किये गये।

दिनांक १४–१२–२००२ शनिवार प्रातः ७ से ६ बजे तक सत्संग वर्खा हुई, प्रातः ६ बजे स्वामी टेऊँराम गौशाला में समस्त सन्त मण्डली ने मंत्रोच्चारण के साथ हवन आहूत किया।

प्रातः १०:०० बजे ध्वज वन्दना एवं ध्वज चढ़ाकर स्वामी टेऊँराम जी की महाआरती एवं बैण्ड–बाजों के मधुर स्वर लहरियों घर सन्तगण एवं सेवाधारी झूम उठे, प्रातः ११ बजे पाठों का भोग १२ बजे आम भण्डारा का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में भक्तजनों ने आम भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

सांय ५ बजे शाम शनिवार की थी बड़ी सुहानी।
सद्गुरू बैठे सामने थी आनन्द की बाड़ी।।

इस शाम को सद्गुरु जी के आश्रम का स्वर्ण जयन्ती समारोह का आखिरी दिन था, स्वामी जी ने अपना आसन ग्रहण किया। समस्त प्रेम प्रकाशी, आश्रम में स्वामी जी के दर्शन करने आए। समस्त मण्डलों के सेवाधारी अपनी–अपनी वेष–भूषा में स्वामी जी के स्वागत के लिए परेड के साथ एक–एक करके आए, प्रथम स्वामी टेऊँराम गरीब सहायता समिति व स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली द्वारा फूल मालाओं के साथ व प्रेम प्रकाश महिला मण्डल द्वारा स्वामी जी को पुष्प कमल भेंट कर स्वागत किया, फिर अन्त में नाचती झूमती प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली ने फूल माला पहनाकर स्वामी जी का अनूठा स्वागत किया गया, स्वागत के पश्चात् मण्डल के सदस्य अपनी–अपनी सेवा में लग गये, फिर स्वामी जी ने ५० पौड़ का केक काटा और ५० दीप प्रज्जवलन कर सत्संग वर्खा की। तत्पश्चात् मन्दिर में शानदार आतिशबाजी की गई व महाप्रसादी का भोग लगाकर पल्लव पाकर स्वर्ण जयन्ती समारोह का समापन हुआ। समापन के समय हजारों की संख्या में प्रेमी व भक्तगणों ने आकर पुण्य का लाभ कमाया। इस स्वर्ण जयन्ती समारोह में कोटा आश्रम के श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डल का तन–मन का सहयोग व सेवा कार्य प्रंशसनीय था। मनोहरलाल तीर्थानी, हरीश दयानी, दिनेश सुखेजा, विष्णु, बलदेव राजानी (मामा), श्रीचन्द अम्बवानी व स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली से रमेश साधवानी व हुकुमतराय, स्वामी टेऊँराम गरीब सहायता समिति से तीरथदास करमचन्दानी, गुरुनामल, सुन्दरदास, गोपीचन्द, चन्द्रप्रकाश, श्री प्रेम प्रकाश महिला मण्डल से विद्या दयानी, कविता अन्य माताओं व प्रेमियों द्वारा सेवा कार्य में भाग लिया गया। **प्रेम सुमन** रंगीन स्मारिका का प्रकाशन रजत जयन्ती समारोह की स्मृति स्वरूप किया गया।

–विक्रम कन्धारी, कोटा से

सत्संग-ज्ञान-चर्चा

यात्रा दर्शन

सदगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज - सत मण्डली का देशाटन

मुम्बई खार प्रेम-प्रकाश आश्रम से व सत्संग समारोहों का नये साल में श्रीगणेश

रायपुर व भाटापाड़ा प्रेम प्रकाश आश्रम व माता समझबाई का वार्षिकोत्सव

पूज्यपाद सन्त प्रवर सद्‌गुरु स्वामी श्री हरिदासरामजी महाराज ने अपनी हार्दिक इच्छा को साकार करते हुये विशाल भारत देश के विशाल शहर मुम्बई में सद्‌गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज के विशाल प्रेम प्रकाश आश्रम का निमार्ण कराया और शुभ दिन सोचकर आपने इसका वार्षिक उत्सव भी नये साल आरम्भ के साथ रखा और ***अब यहीं से श्री प्रेम प्रकाश मंडल के महामंडलेश्वर प्रेम प्रकाश आश्रम के उत्सवों का शुभारम्भ करते हैं।*** *गुरुदेव स्वामी श्री भगतप्रकाश जी महाराज अपनी संत मण्डली सहित ३० दिसम्बर को जब मुम्बई पधारे, तब गुरुदेव के दर्शन एवं स्वागत के लिये प्रेमियों का मन उत्साह से प्रसन्न होने लगा। प्रेमियों के मन में उत्साह दौज के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा। गुरुदेव के दर्शन करके प्रेमी आनन्द के रस में मग्न हो गये। ३१ दिसम्बर साल का अन्तिम और १ जनवरी के प्रथम प्रहर को स्वामी जी के साथ मनाने के लिये प्रेमी प्रेम प्रकाश मन्दिर में आने लगे। प्रेमियों से आश्रम भर गया।*

संत मण्डली ने सभी के लिये नया साल शुभ रहे, यह भगवान से प्रार्थना की। प्रेमियों ने गुरुदेव से नये साल की नई आशाओं सहित गुरु भक्ति बढ़ने का आशीर्वाद माँगा। सद्‌गुरु महाराज द्वारा देश–विदेश में सभी का कल्याण हो ऐसा पलव पहन कर सभी को नये साल की बहुत–बहुत शुभकामनायें दीं।

१ जनवरी से ही गुरुदेव के दर्शनों के प्यासे प्रेमियों की भीड़ आने लगी। सेवाधारियों ने तन–मन से सत्संग मण्डप को फूलों से सजाकर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का शुभारम्भण किया। विद्वान पण्डितों द्वारा हवन के पवित्र मंत्रों का उच्चारण होने लगा। ध्वजा वन्दन का समय जैसे–जैसे नजदीक आने लगा, प्रेमी आनन्दित होने लगे। **प्रेम प्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर द्वारा ध्वजा वन्दन करने के साथ ही प्रेमी गायक, भगत बड़े ही प्रेम से प्रसन्न होकर एक ही स्वर में मेघ की गर्जना के समान 'हम गीत सनातन गायेंगे, निज धर्मध्वजा फहरायेंगे'** गाने लगे। ध्वजा से फूलों की वर्षा के समय ऐसा लग रहा था, जैसे सुरपुर के देवता धर्म ध्वजा के लिये फूलों की वर्षा कर रहे हों।

सेवाधारी संत सुन्दरदास जी को संतों के वस्त्र पहनाये गये। मेले की व्यवस्था में डॉ. अशोक चैनाणी, जेठानन्द, चन्द्रलाल, बदलाणीजी, चन्दरलाल, हीरानन्दानी, मोतीलाल जी, ममूजी, दीपक कुमार जी संनद्ध थे।

प्रेमियों की अपार भीड़ को देखते हुये सत्संग **लोक हित कुटीर में रखा गया जिसकी सजावट ऐसी सुन्दर थी कि इन्द्र की अमरावती का बरबस ख्याल आ जाये। विशाल मंच पर आचार्य के साथ सभी गुरुदेवों की तस्वीरें शोभित हो रहीं थी। सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज संत मण्डल के साथ ऐसे शोभित हो रहे थे, जैसे चन्द्रमा अपने तारा मण्डल के साथ शोभित होता है,** जिसे देखकर सभी प्रेमी आनन्द में डूबने लगे। 'मुम्बई खार मण्डली' द्वारा गुरुदेव के सदुपदेश का सभी लाभ प्राप्त कर सकें, इसके लिये मुम्बई एवं आसपास के शहरों में स्थानीय केबल से सीधा प्रसारण हो रहा था। मंच पर संत, विद्वान, कलाकार एवं गायक मंच की गरिमा को बढ़ा रहे थे। सुप्रसिद्ध वायलिन वादक कन्हैयालाल एवं सन्त बुधरमल ने गुरुदेव की महिमा को बताकर सभी को आनन्दित कर दिया।

संत सजय, संत लक्ष्मण, संत परसराम, संत हरीश कुमार, संत शंभूलाल, संत नरेश कुमार इन्दौर, संत घनश्याम, संत नरेश कुमार, संत हंसप्रकाश, संत झामनदास, संत दयाप्रकाश, आदि संत वृन्द ने महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। आज सत्संग हॉल विशाल समुद्र के समान हृदय को धारण किये हुये था। बड़ी संख्या में जयपुर, मुम्बई, कल्याण, पूना, पिम्परी, बागलघोट, कर्नाटक एवं देश–विदेश से प्रेमी आये हुये थे। अपार जन समूह देखकर प्रेम–प्रकाशियों के हृदय में अमरापुर दरबार जयपुर का ख्याल बरबस ही आने लगा। सभी प्रेम से संतों के वचनों को सुन रहे थे।

खार मुम्बई प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिक महोत्सव नव–वर्ष की नयी भेंट सन्त समागम का अनोखा विवरण कलम को ताकत नहीं है आज प्रातःकाल की मधुर बेला में गुरू वन्दना प्रार्थना से सत्संग का कार्यक्रम आरम्भ हुआ तत्पश्चात् सन्त श्री मुक्त ने गुरु महिमा का भजन गाया, बाद में सन्त हरीओमलाल द्वारा अमरापुर वाणी के ***हथिड़ा जोड़े अर्ज कयां थो मुंहिजी सुणु अरदास गुरु***– भजन गाकर प्रवचन किया। मनुष्य जन्म का स्वांग जो परमात्मा ने हंमें दिया उस पर भी सन्तों का बाना पहन कर जो गुरु द्वार पर आये हैं प्रार्थना करें नाम स्मरण शुभ कर्म के साथ विचारों स्वभाव आचरण कर्म को पवित्र रखें, जिससे जीवन ही पवित्र हो जाय। सन्तों ने तन पवित्रता से ज्यादा मन पवित्रता का महत्व बताया है।

जल नहाये नहाये नहीं अन्तः करण मलीन
सुरा पान को पात्र सौ होये शुद्ध कभी न

माँ प्रेम जो नातो प्रभु शल तोसां तोड़ निभाया भजन से स्वामी जयदेवजी महाराज ने सत्संग आरम्भ किंया, अपनी वाणी से बताया कि संसार के अन्दर जीव ने जहाँ–जहाँ भी प्रेम रखा वहाँ से धोखा ही मिला, हे मेरे मन सन्तों से गुरु से भगवान से नाता रख कर देखें, जहाँ से तेरा यह लोक परलोक संवर जायें :–

सन्त गुरु परमात्मा साचे संगी जान,
आदि अन्त जो राखनहार, तिस सिंउ प्रीत न करे गंवार।
अनमोल तेरा जीवन यू हीं गवां रहा है,
किस ओर तेरी मंजिल किस ओर जा रहा है।।

समल के वृक्ष पर तोता आता है फल की सुन्दरता देख प्रसन्न होता है, सोचता है पके फल खाऊँगा, आनन्द आवेगा, परन्तु फल पकता है, फूटता है रुई के फीका स्वाद आता है। निराश होकर लौटता है तैसे ही जीव ने संसार से प्रीत रखी अन्त में जाना कि सच्चा आनन्द अपने अन्तर के आत्म चिन्तन में है संसार में सुख नहीं शान्ति नहीं यही बात सन्तों गुरूदेव द्वारा भी बतायी गयी है

मैं धनु पायो हरि नामा मेरो मन धावन ते छूटियो।

सन्त नामदेव जी (लखनऊ) ने भी अपने प्रवचनों में सन्तों की महिमा का गान करते हुए भजन गाया।

भागनि सां जीव खे थो संतनि जो संगु मिले।
पूरब जनम जी जहिंजी तकदीर थी खुले।।

सन्तों की वाणी वचनों को सुनकर विश्वास रखें, हुजती मानव सन्तों से वह कृपा नहीं पा सकता, सन्तों से नम्रता निहठाई प्रार्थना का व्यवहार रखें, स्मरण कीर्तन सेवा ही कलयुग में श्रेष्ठ साधन है।

सन्त श्रीमुक्त ने सत्गुरु टेऊँराम की अमृतवाणी से भजन गाया, भक्त माणिक ने : **सत्‌नाम सक्षी सदा बोलि प्यारा** श्री शंकरलाल जी ने आदर्श नगर अजमेर से आकर अपने मधुर गीतों वाणी से अंग्रेजी में भजन गाया व आचार्य सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महिमा के भजन से सारी संगति को भाव विभोर किया, सारांश यह कि गुरूदेव की भक्ति अमर जगत से निराली थी ऐसी कोई भक्ति नहीं कर सकता। सन्त बुधर प्रकाश ने भी मधुर कव्वाली गाकर सारी संगति को मस्त कर दिया।

स्वामी टेऊँराम मूंते करि को रहमु

पूज्य स्वामी चेतन कृष्ण जी महाराज ने अपने प्रवचनों में बताया कि स्वामी टेऊँराम जनि चयो स्वामी ग्वालानंद महाराज– खे कलयुग जोड़ जमाए थो हिन समें में कीर्तन भजन द्वारा संतनि जीवन खे जागाइण जो कमु कयो, गांव–गांव, गली–गली में नामु जपाए अहिड़ी भक्ति कई जो देवताऊनि भी गुल वरसाया, उन्हनि जी भक्ति जी शक्ति अजु भी प्रेमिनि जू आंशू पुजनि थियूं" भजन के द्वारा महिमा बताई।

सन्त श्री नामदेव महाराज ने सत्संग करते हुए कहा :–

सत्‌गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास,
कहे टेऊँ नितु सुमति दे, संतनि मांहि निवास।

मन मेरा पंछी भया, उड़ी चला आकाश,
स्वर्ग लोक खाली पड़ा, साहब सन्ता पास।।

सन्त भक्त मेरा जहाँ कीर्तन करते हैं वहां मैं निवास करता हूँ सत्संग से कुछ सीखना है जिन्दगी ने कुछ जाना समझा अपने को देखा वे ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। सन्त बताते हैं

तुलसी वो दिन याद कर जब तले था सीस
अब तो माया मोहिया भूल गाय जगदीश।

डॉ. दयाल आशा ने भी अपने मधुर भजनों द्वारा सारी संगति प्रेमियों को **आओ श्याम-श्याम, मधुर-मधुर तुहिंजों नाम,** के साथ–साथ बताया **जबान जहिंजीं मिठिड़ी सो सभ खे वणे थो सो हजारनि दिलिनि ते हुकूमत करे थो,** मन को समझाते हुए बताया कि नफरत को अंदर से निकाल कर प्रेम की ज्योति जगायें। सत्‌गुरु टेऊँराम महाराज ने भी मण्डल का नाम ही प्रेम प्रकाश मण्डल रखा, मानव मात्र के लिये प्रेम ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों के लिये भी प्रेम हाना चाहिये, निर्मल मन से ही ईश्वर को पाया जा सकता है।

पूज्य स्वामी देव प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में निम्नाकिंत भजन गाया। **भलो कजांइ भ़गवान संगति सारीअ जो** गाते हुए सार बात यही बतायी कि आप सभी आये हैं शाति में बैठे हैं यही तपस्या है **शांति जिते उति सुर्ग़ उते थी वैकुण्ठ भी उति ज़ाणिजि कावड़ि सारो झगड़ो जाते सो थी नर्क द्वारो,** सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजजनि तपस्या कई सत्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराजजनि त्यागी वैरागी हुआ गुरुदेव महाराज जनि भी केतिरी वाणी स्वामी टेऊँराम जनि जी महिमा ग़ाती। सन्त सभी का भला उपकार ही करते हैं।

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में अमृताशीष देते हुये बताया :–

रखियो जहिं नातो स्वामी सत्पुरषनि सां
तहि लघें माया मोह खां पूर्ण पदु पातो
चीटीअ ऐं कुचर में हिकु साहिब सुञातो
सो वाए ना वातो रहे गुम ज्ञान में
जोग़िनि लइ मां थी जोग़ियाणी,
श्रद्धा सां मां ब़ुंधदंसि ब़ाणी।
वचन तिनी जा मूंखे वणी वया,
जोग़ी जीअ में जादूं हणी वया।

संतनि के वचनों को सुनकर अपने जीवन का रास्ता बदलना चाहिये, संसार के उलझनों में मन राम के नाम में नहीं लगता है **दि़ठो सभ विसारि अणदि़ठे खे यादि करि** सत्संग के वचनों को समझकर चलने से संसार सागर से जीव पार हो जाता है

तुलसी लोहा काठ संग चलत फिरत जल मांहि
बड़े न डूबन देत है जांकी पकड़ी बांह

सत्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज जी को ऐसी लग्न लगी व अपना अनुभव वाणी के द्वारा वर्णित किया,

लग्न लगी जब राम से क्या लोकनि से काम,
टेऊँ मोहि न भावहीं खान पान आराम
जग सारो सुञ भाया, दिलि कहिसां अटिकायां
घरु कीन वणे मूंखे मां त वेदुंसि जोगिनि दे

नाम स्मरण का फल गुरु की भक्ति प्राप्त होती है।

कहे टेऊँ ब़ियो कीन खपे कुछु, सत्‌गुरु जी सिक मन में
सत्‌गुरु जे पिणि खास परसण लइ तार वज़े थी तन में
ब़ी लगे़ दुनिया फिकड़ी रे पर द़ाढी तिखड़ी रे

जीवन कम, समय कम, काम ज्यादा करना है,

क्षण भङ्गुर जीवन की कलिका क्रो जानें प्रातः खिली न खिली
कहे टेऊँ से जड़ व्या लाए वतन तिनी जो दि़सदंसि ठाए सिक जी मूंखे द़ेई कणी व्या।

गुरुदेव से यही वर मांगे सद्बुद्धि सुमति का जिससे जीवन सफल होवे।

खार बाम्बे वार्षिक महोत्सव में प्रातःकाल सत्संग आश्रम पर ८ से १० तक व सायंकाल लोक हित कुटीर में होता था दोनों समय भजन भोजन का भण्डारा चलता था। आखिरी ५ जनवरी प्रातः सत्संग उपरान्त सन्त स्वामी जगदेव जी महाराज ने पाठ का भोग पाया तत्पश्चात् भगवान की आरती व गुरुदेव की आरतियों के बाद सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने पलव पाया।

सांयकाल सत्संग में अपार जन समूह ने भाग लिया जिसमें पूना कल्याण बाम्बे पास के कई प्रेमियों ने भाग लिया। सारा आश्रम लोकहित कुटीर चकाचक भरा था।

रायपुर आश्रम का वार्षिकोत्सव (७ से १० जनवरी २००३)

खार प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिक महोत्सव पूर्ण करने के बाद पूज्य गुरुवर सन्त मण्डली समेत हावड़ा बाम्बे एक्सप्रेस से छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर में पहुँचे जहाँ पर पहले से ही अपार प्रेमी स्वागत हेतु पहुँच चुके थे। हृदय से आकण्ठ प्रेम में डूबे प्रेमी इतने प्रफुलित थे जैसे चन्द्रमा को चकोर व पूर्णमासी के दिवस पर सागर चन्द्रमा को देख उमड़ता है वैसे ही प्रेमी जगह-जगह पर, फूलों लताओं से सजी हुई जीप में बैठे पूज्य गुरुवर का स्वागत किया, बैण्ड व डंडिया नाचते जयघोष करते आश्रम पर पहुँचे व ४५ मिनट सत्संग किया। यह उत्सव का द्वितीय दिवस था तृतीय दिवस पर प्रातः ८ से १० तक सत्संग होकर श्री गुरु महाराज व सन्तों का प्रेम प्रकाश मण्डली द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। प्रार्थना सन्त हरीश व नन्दलाल द्वारा की गयी। तत्पश्चात् सन्त श्री मुक्त सन्त हरिओमलाल ने चौथे दिवस पर गुरु महिमा का गान किया अन्त में श्री सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों का आरम्भ करते हुये बताया–

कहे टेऊँ हरि नाम जप भूलो ना क्षण एक
भोगत-भोगत विषय रस बीते जनम अनेक
गोविन्द जो थी नाम मिठो जो तू सिक सां उच्चारीदें
त बेड़ो पंहिजो तूं तरीदें
मीरां सुन्दर शाम चयो जहर मां थी अमृत वयो
अहिड़ो विश्वास धारीदें

परमात्मा का नाम मीठा परन्तु प्रेम से उसको मन को एकाग्रता से जपा जाय वो नाम का आनन्द तभी प्राप्त होगा। आगे श्री गुरुवर ने अपनी वाणी में बताया मानुष देह भगवान कृपा से संत कृपा से सत्संग गुरु कृपा से नाम भी सहज प्राप्त हो गया, अपितु उसका जप करना प्रेम से बड़ा कठिन है। वह प्रेम सन्तों के संग से अपने में जाग्रत हो जाना यह दुर्लभ है। प्रेम प्रकाश आश्रम रायपुर के वार्षिक महोत्सव के आज चतुर्थ दिवस पर भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के साथ-साथ गोप ग्वालों के साथ जो नृत्य किया गया, वह आनन्द भूला नहीं जाता, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इस महोत्सव को देखने हेतु रायपुर धरा पर सृष्टिकर्ता स्वयं पधारे हों। प्रथम चरण में आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज जी के पावन तप स्थली की महिमा का भजन, उन गुरु भक्ति से पूर्ण किशोर अवस्था के बालिकाओं द्वारा भाव पूर्ण भजन **ए मन चल तू अमरापुर में गुरु का दीदार मिले, जहाँ गम भी नहीं चिंता भी नहीं बस सच्चा प्यार मिले** नृत्य प्रस्तुति के साथ गाया गया। इसके पश्चात् द्वितीय चरण में मन को श्री श्याम सुन्दर के चरणों से जोड़ने का वह मधुर भजन बड़े मीठे स्वर में ६ बालिकाओं द्वारा संगीत मय नृत्य के साथ सन्तों के समक्ष गाकर भाव विभोर कर श्री बृजधाम का आनन्द दिया। भजन था **राधे राधे रटो, चले आयेंगे बिहारी** इसी समय में तृतीय चरण में फिर ६ बालिकाओं द्वारा भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकंद की रास लीला जो कि गैया चढ़ाने के समय की थी वह भजन प्रस्तुत किया गया। **मैया यशोदा ये तेरा कन्हैया पनघट पै मोरी पकड़े कलईयां, तंग मुझे करता है संग मेरे लड़ता है, राम जी की कृपा से मैं बची।**

भगवान श्याम सुन्दर की चतुर्थ लीला के अन्तर्गत निम्नांकित भजन द्वारा नृत्य करते हुये ८ बालिकाओं ने सारी संगति प्रेमियों को आनन्दित किया।

बृज में आनन्द भया जै कन्हैयालाल की
जय जसोदालाल की

इस भजन के बाद पंचम लीला के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध गीत जो कि हर जबान के साथ गाया जाता है वह था–

छोटी-छोटी गैया, छोटे-छोटे ग्वाल
छोटो सो मेरो मदन गोपाल

इसमें ६ बालिकाओं ने भगवान श्री श्याम सुन्दर के साथ-साथ, संग-संग नृत्य करते हुए बड़ी ही सुन्दर प्रस्तुति दी।

उपरोक्त कार्यक्रमों में भाग लेने वाले उत्साही बच्चों को पूज्य गुरुवर स्वमी भगत प्रकाश जी महाराज

द्वारा आशीर्वाद के साथ–साथ अपने कर कमलों से उपहार भी दिये गये।

सपना मंधानी, शारदा थारानी, सोनी पारप्यानी, ममता ठाकुर, प्राची खेमाणी, कोमल ठाकुर, पूजा भाटिया, मोनिका सबलानी, पूनम भाटिया, गुंजन थारानी, जेनीश खेमाणी, हैपी रामचंदानी, रूची खेमाणी। इन बच्चों को बाल लीला नृत्य का ज्ञान देने वाली सबलानी बहिन को भी पूज्य स्वामी जी द्वारा आशीर्वाद स्वरूप पाखर प्रदान की गयी।

रायपुर प्रेम प्रकाश आश्रम के वार्षिक महोत्सव के पांचवे दिवस का आंखों देखा हाल कलम के द्वारा लिखना बड़ा मुश्किल है प्रातः ८ बजे से माताओं बहनों ने भाव पूर्ण भजनों को गाया, तत्पश्चात् ६ बजे हवन की तैयारियां होने लगी भगवान श्री लक्ष्मीनारायण की पूजा अर्चना के साथ आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के श्री विग्रहों का अभिषेक किया जाकर हवन यज्ञ ब्राह्मण सन्तों व प्रेमियों ने किया, यह दृश्य भी अनुपम दर्शनीय था मानो भगवान श्री विष्णु जी स्वयं देवों व देवियों के साथ आ पहुँचे थे। आश्रम के अन्तर व बाहर प्रेमियों की बड़ी भीड़ थी प्रेमियों का हृदय भाव सागर की तरह उछल–उछल कर उमड़ रहा था। ६:३० बजे से हवन यज्ञ प्रारम्भ हुआ व ११:०० बजे सर्व सन्तों द्वारा वेद मंत्रों व गुरु वन्दना मंत्रों के साथ पूर्णाहुति होकर समापन हुआ, तत्पश्चात् सन्तों द्वारा सत्संग व पाठों का भोग गीता व प्रेम प्रकाश ग्रंथ का सन्त हरीओम व सन्त नामदेव द्वारा पारायण किया गया, तत्पश्चात् श्री गुरु महाराज पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा सत्संग का अमृत प्रेमियों को पिलाया गया, अन्त में आश्रम के ऊपरी तल पर प्रेम प्रकाश धर्म ध्वजा की स्थापना, **हम गीत सनातन गायेंगे, स्वामी टेऊँराम तुहिजों झण्डो झूले, जन्मलही अजु जोगी आयो** के मधुर गीतों के बाद आम भण्डारा प्रारम्भ हुआ जो शांम को ४ बजे तक चलता रहा। सांयकालीन सत्संग समापन सभा में बड़गड़ से आयी बहनों सुषमा होतमचन्द आसूदानी, पिंकी नारायणदास आसूदानी ने प्यार व मधुर वाणी से भजनामृत का पान प्रेमियों को कराया।

द्वारकापुरी इन्दौर से आये हुए सन्त नरेश कुमार जी ने मधुर भाषा में गायन के साथ बताया भगवान ही निर्गुण निराकार रूप से सगुण साकार रूप धारण कर इस भू–मण्डल में जीव मात्र के कल्याण करने हेतु सत्गुरु के अवतार स्वरूप आते हैं जो नाम जप से रास्ता बताकर अपना कर्तव्य निभाते हैं।

सन्त दयाप्रकाश जी ने सत्संग सभा को आगे बढ़ाते हुए कहा:– **सत्नाम साक्षी कहते चलो कहते चलो** का भजन गाकर नाम महिमा को गाया व प्रेमियों को सुनाया कि **कलयुग केवल नाम अधारा स्मिर स्मिर नर उतरहिं पारा** स्वामी जयदेव जी महाराज ने **जयकार थीन्दुअ जग में जे नामु कमाईन्दे, प्रीतम प्रभुअ सां करि प्यार सदा करि सच जो तू वहिंवार भलाई तहिमें तुहिंजी आ। सोए अविद्या नींद में कहे टेऊँ बहुकाल, अब तो गफिलत छोड़ के सुमरो दीनदयाल** जिस पर गुरु कृपा होवे वो ही जान सकता है **सो जानइ जिसु देह जनाइ,** अपना उद्धार कैसा किस प्रकार होवे, असत् से किनारा कर सत् को जान लेना ही मानव का प्रमुख कर्तव्य है। **कीअं प्रभुअ खे परिचाया, गणितिनि मां पहिलाज न वटिबो समय हथनि मां हली वेदों कदमनि ते वञी सिर खे सटिबो बी कहिड़ी कारि कमांया** भीष्म पितामह की आसीस द्रोपती को मिली जिससे रक्षा हुई, भीलनी ने भक्ति प्रेम से प्रभु पाया।

भाटापाड़ा में माता समझबाई वर्सी (११ से १३ जनवरी २००३)

रायपुर से अमरापुर बस व अन्य वाहनों द्वारा प्रेमियों व सन्त मण्डली समेत सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज प्रातः ८ बजे चलकर १० बजे भाटापाड़ा पहुँचे। जहाँ आश्रम से लगभग २ किलोमीटर पहिले स्वागत हेतु अगवानी करने अपार प्रेमी उपस्थित थे। जयघोष की आवाज के साथ फूलमालाओं से सारे सन्तों का हार्दिक स्वागत किया गया, बैंड बाजों के साथ शोभायात्रा में आश्रम पर सन्त मण्डली को ले आया

या। शाम को ४ बजे आश्रम से जलूस निकाला गया जिसमें शहर के सारे प्रेमी गण साथ–साथ चलकर लों से स्वागत करते हुए स्थान–स्थान पर शरबत व रसाद का वितरण करते हुए शहर के मुख्य बाजारों से रिक्रमा करते हुए यह जलूस रात्रि ७:३० पर आश्रम पिस पहुँचा। रात्रि ८ से १० बजे तक सत्संग का ार्यक्रम रहा व दूसरे दिन प्रातःकाल ८ से १० तक त्संग उपरान्त आश्रम की ऊपरी तल पर ध्वजा वन्दन कड़ों प्रेमियों सन्तों व गुरु महाराज की उपस्थिति में कया गया। छोटा सा शहर हृदय प्रेम की क्या गाथा खी जाय, प्रेमियों द्वारा यह कहा जाय कि स्वामी जी रा साल इन्तजार करते–करते यह दिवस पूज्य माता मझबाई के वर्सी वार्षिक महोत्सव के दिवस हमारे ये मानो जीवन का आधार लिये आते हैं। रात्रि त्संग में समय से पहले ही प्रेमी आ पहुँचे। ठीक आठ जे सत्संग आरम्भ किया गया। व १० से ११ बजे तक जन अन्ताक्षरी का कार्यक्रम हुआ जिसमें कई प्रेमी यपुर व आसपास के प्रेमी देखने व सुनने भाग लेने तु पधारे इसमें भाग लेने वाले थे :– कविता मंधानी, ा थारानी, जय हबलानी, राखी पारप्यानी, शशी थारानी, मली, लाजी थारानी, दादी मीरा (कल्याण)।

बड़े हर्ष उल्लास के इस माता समझबाई उत्सव पांचवा दिवस प्रातः कालीन सत्संग प्रार्थना से आरम्भ या गया। सन्त हरीश, सन्त परसराम, सन्त नन्दलाल मनमोहक भजनों द्वारा सारी संगति को आनन्दामृत लाया। सन्त नरेश कुमार इन्दौर, भगत मूलचन्द भक्त लराम व सन्त श्री मुक्त ने भी समय–समय पर चनों सत्संग व गुरुदेव आचार्य जी के जन्म साखी से री संगति को मस्त कर दिया।

जलूस में लीलाधारी भगवान श्री कृष्णचन्द्र गोप लों के साथ व त्रिपुरारी भगवान भोले शंकर व काली ा के साथ स्वरूप में बने उत्साही बालक बालिकाओं रे रास्ते भर नृत्य करते हुए सभी को मन्त्रमुग्ध सा दिया था। निशा थारानी,उपासना थारानी, प्रियंका नी, पंकज थारानी, दरवेश, हबलानी, योगेश हबलानी, ज डुलानी, मंजीत दावानी, वर्षा दावानी, रोहित वानी, अकिता आर्य, पियूष सबलानी, मंजू पारवानी, भव्य केशवानी, सौरभ सबलानी सहित सभी बच्चों को प्रेम प्रकाश मण्डली भाटापारा द्वारा पूज्य स्वामी जी के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। आश्रम की ओर से डॉ. अमलेश मैती जो कि निष्काम सेवा कर रोगियों के रोग की निवृति करते हैं को भी स्वामी जी द्वारा पाखर पहिनाकर सम्मानित किया गया।

बिलासपुर-कोरबा में सत्संग ज्ञान यज्ञ
(१४ से १६ जनवरी २००३)

भाटापाड़ा से बिलासपुर होते हुए कोरबा पहुँचे सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली समेत आचार्य सतगुरू टेऊँराम जी महाराज का यश चारो तरफ दसो दिशाओं के साथ साथ धरती से आकाश तक गुंजित हो रहा है। **बिलासपुर** में सन्त बुधर प्रकाश के भाई भक्त ओंकार के निवास को पवित्र करते अटलमल चिमनानी, जो कि पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के सम्बंधी है के निवास से होते हुए मनोहर भारती के यहाँ पर पहुँचें, जहाँ कि सत्संग का कार्यक्रम व पाठ भोग व भण्डारा हुआ, सैकड़ों प्रेमियों ने दर्शन सत्संग कर लाभ लिया। इन्हीं प्रेमियों के यहाँ पर प्रति शनिवार सत्संग का कार्यक्रम होता है प्रातः १० बजे से २–३० बजे वहाँ रहकर शाम ५ बजे कोरबा शहर में अमरापुर वाहन द्वारा पंहुचे, बड़ी सख्या में प्रेमियो ने स्वागत करते हुए फूलों की बौछार व जयकार की गजकार से बैड बाजो के साथ नाचते गाते प्रेम प्रकाश आश्रम पर पंहुचें तत्पश्चात ६ से ७ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम हुआ। माता पम्मी देवी व प्रेम प्रकाश मंडली द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ फूल मालाओं से स्वागत किया गया।

''शायरी''

(१) हज़ारो फूल खिलते है
खुशबू सभ से नही आती
जबां तो सभ में होती है
हरिगुन कोई कोई गाती

(२) जपूगां नाम तब तक मैं
जब तक जिन्दगानी है
शरणागत हूँ मेरे गुरूवर
गंगा में जब तक पानी है

(३) उत्तम ये देह पाई है
कदर इसका न तुम कीता
हजारों को तो तुम जीता
मगर मन को नहीं जीता
"अमरापुर वाहन में चलते चलते" (सन्त हरीओम ग्वालियर)

कोरबा प्रेम प्रकाश आश्रम प्रातः कालीन सत्संग सभा का गुरू प्रार्थना से आरम्भ हुआ जिसको संत परसराम व सन्त नन्दलाल भक्त मूलचन्द सन्त श्री मुक्त ने गुरू महिमा के भजनों को गाकर आज गुरूवार के दिवस पर **रे मन अब उठ जाग कि तुझे हरी मिलेगा** तत्पश्चात सन्त हरीओमलाल ने **राम स्मिर सुख धाम, मेरे मन होंवहि पूरण काम** भजन सत्संग किया तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने **अमृत वेले सतगुरू जी वठ शरणि प्यारे** अमृत वेला माने मनुष्य का चोला है जिसमें प्रभू प्रभात्मा ने मन बुद्धि इन्द्रियों के साथ साधन व सुविधा दी जिससे परमात्मा को पाया जा सके, व्यवहार को व परमार्थ को स्वच्छ रखते हुए श्रेष्ठ कर्म व मन निमर्लता से परमात्मा को पाया जा सकता है इसके उपरान्त सभी सन्तो व प्रेमियो द्वारा शान्ती के दोहों का पाठ किया गया व हवन वेदोक्तमंत्रों द्वारा किया गया तत्पश्चात् ध्वजावन्दन हुआ और आम भण्डारा भी किया गया जिसमें सैकडों प्रेमियों ने प्रसाद पाया इसी अवसर पर **श्री झूलेलाल मैरिज ब्यूरो पूज्य सिन्धी पंचायत** द्वारा बनाया गया जिसका प्रारम्भ श्री गुरू महाराज की उपस्थिति में पलव आशीर्वाद से किया गया।

परम पूज्य सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के मुखारविन्द से निःसृत अमृत प्रवाह

लोक दुनिया जाछा भी कनि पया तहिमें तुंहिजो छा हरिको भोगे करिणी पंहिजी तू ना जीउ जलाइ औखी सौखी हे प्रीतम प्यारा पंहिजी तोड़ि निभाइ
सिर देवन तो सरल है आध धडी पल याम
नेह निभाना कठिन है सारी उम्र का काम

चंदन कोई मिट्टी लावे कोई निदें को यश गावे कर्म अपने सो फल पावे रहो तुम मौज मस्ती में दुनिया के तरफ ना देखो रहो तुम मौज मस्ती में पची लालु थी मटसे निकरनि आवीअ अंदरि ग़ुरन्दा जे बिझ भी फली फुली से निकरनि धरतीअ अंदरि ग़ुरन्दा ज दान ग़ुझे जो फलु थी ऊँचो समुझु इन्हीअ उहिज़ाण ख लिकी छिपी हरिनामु स्मिर जींअ सुधि न पवें संसार ख

सच्चे दाता जे दरबारि साधू साफु सुणाइन थ साधु सदावण सूली पावणु जीअरे पंहिजो जिस्मु जलावण तनु दे जग जे वहिवारनि खे मनु दे गुरू जे वीचारानि ख ईऐं बेईलोक संवारि तूं पर सांई अ खेन विसारि त भले दुनिया जी करि कारि तूं पर सांईअ खेन विसारि त

कोरबा से चापा शहर होते हुए रायगढ़ यात्र
(१७–१८ जनवरी)

अमरापुर वाहन से पूज्य गरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का चापा शहर पहुँचने पर प्रेमियों द्वारा फूलों की वर्षा करके स्वागत किया गया पूज्य स्वामी जी का शहर के नाके से बैण्ड बाजों के साथ शहर में पर्दापण हुआ कई प्रेमियो को दर्शन देते हुए आचार्य सतगुरू टेऊँराम जी की यश गान करते हुए उसी स्थान पर पहुँचे जहां प्रेमियो द्वार मिलकर प्रति शनिवार को सत्संग भजन कीर्तन किया जाता है। कई प्रेमियों के दुकान प्रतिष्ठान पर आशीर्वाद करते हुए भक्त वरियलदास के निवास पर पधारे तत्पश्चात ११ बजे चलकर २ बजे के करीब रायगढ़ पहुचे जहाँ पूज्य पंचायत व प्रेमियों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया, प्रेमियों के अन्दर ऐसा उत्साह था कि क्या लिखा जाय ग्यारह वर्षो उपरान्त प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज पधारे हैं इससे पूर्व पूज्य गुरुवर स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज १९९२ में आए थे जब सिन्धी धर्मशाला का शुभारम्भ हुआ था आज इसी सिन्धी धर्मशाला में रात्रि ८ से १० बजे तक पूज्य गुरुवर व सन्त मण्डली का सत्संग का कार्यक्रम रहा जिसमें सारे शहर के सिन्धी समाज व अन्य प्रेमियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया

कुरुद ग्राम में सत्संग दर्शन के बाद
धमतरी में सत्संग समारोह (१९-२० जनवरी)

रायगढ़ के प्रेमियों को आशीर्वाद देकर दिनांक १९ जनवरी २००३ को प्रातः ७ बजे पूज्य सतगुरु जी महाराज सड़क मार्ग द्वारा धमतरी के लिये प्रस्थान किया। धमतरी

मार्ग पर "कुरुद गांव" के प्रेमियों के निवेदन पर पूज्य स्वामी जी कुरुद के प्रेमियों के यहाँ सत्संग कर और आशीर्वाद देकर धमतरी पहुँचे जहाँ पर प्रेमियों ने बैण्ड बाजे के साथ और आतिशबाजी कर स्वागत किया।

सायकालीन सत्संग का आयोजन हुआ। जिसमें सभी सन्तों ने और पूज्य सत्गुरु महाराज ने सत्संग कर पल्लव पाकर धुनि लगाकर सत्संग की समाप्ति की।

दिनांक २० जनवरी २००३ को प्रातः सत्संग श्री अशोक कुमार के निवास स्थान पर किया गया और पाठों का पारायण किया गया।

सायंकालीन सत्संग आयोजन श्री कोडूमल सिन्धी धर्मशाला में रखा गया सर्वप्रथम धमतरी की महिला मण्डली ने भजन गाये। उसके बाद सन्तों ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ और स्वामी टेऊँराम महिमा के भजन सुनाये। तत्पश्चात् पूज्य सत्गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचनों में बताया किः–

संभारे थो जो सत्गुरु खे-गुरु बि तहिं सम्भारिन्दो।
अटल विश्वास आ जहिंजो न सत्गुरु तहिं विसारीन्दो।।
दुनिया भलि धिकारे -ताननि सां मारे
जीअण करे मुश्किल - अन्दर भली साड़े
पर न सत्गुरु विसारे थो-प्रेम सां जो पुकारीन्दो

गुरु महाराज जी ने समझाया कि जिसका सत्गुरु में पूरा विश्वास और श्रद्धा है उस भक्त को किसी प्रकार का भय और चिन्ता नहीं। परन्तु जो शिष्य पत्थर की मूर्ति मानते तो हम अभी भी संसार के चक्कर में फंसे हुये हैं। भजन बताया गया है। दुनिया भले हमसे किनारा करे और बुरा भला कहे परन्तु जिसका प्रभु–परमात्मा और सत्गुरु से प्रेम । उसकी सत्गुरु संकट में भी रक्षा करेंगे। भक्तमती मीरा को दुनिया वालों ने बहुत सताया परन्तु मीरा का भगवान में पूरा–पूरा विश्वास था। जिससे वह परमात्मा में लीन हो गई अगर हम भी सत्गुरु महाराज जी में विश्वास रखेंगे तो हमारा बेड़ा भी संसार सागर से पार हो जायेगा। इतना बताकर पल्लव पाकर पूज्य सत्गुरु महाराज जी ने सत्संग का समापन किया।

भानुप्रतापपुर में सत्संग दर्शन से हर्षोल्लास *(२१ जनवरी ०३)*

जनवरी २१, मंगलवार, भानुप्रतापपुर पहुँचते ही प्रेमियों ने हर्षोल्लास में आकर इस तरह पुष्पों की बरखा शुरु कर मानों स्वर्गलोक से देवी–देवताओं के द्वारा बरखा की जा रही हो। प्रेमियों के अति प्रेम को देखकर सत्गुरु महाराज ने सायंकाल के सत्संग में प्रेमियों की मन रूपी प्यासी धरती पर अमृत रूपी वचनों की बरखा करते हुए फरमाया कि जिन संसारी सुखों को प्राप्त करने के लिए हम अपना देव दुर्लभ मनुष्य का चोला व्यर्थ गंवा रहे हैं वो संसारी सुख हमसे छूट जायेंगे या हम उन संसारी सुखों को छोड़ कर इस संसार से चले जायेंगे इसलिए सत्गुरु की शरण लेकर प्रभु की निशदिन पुकार करनी चाहिए।

द्रोपदीआ पुकारियो हो, सिक सां संभारियो हो, नेणन में नीर भरे किथ द्वारिका नगरी, झट प्रगट थियो हरी, वग़नि जो वेस धरे बुध तूं ध्यान धरे मन हीअ कूड़ी कान कहानी आ मन में आ विश्वास, त सत्गुरु अंग संग तोसां साणी आ इहा सत्पुरुषन जी वाणी आ।

दल्ली राजहरा में दिव्य सत्संग ज्ञानयज्ञ *(२२ जनवरी २००३)*

२२ जनवरी, बुधवार, प्रातःकाल लगभग ७:३० बजे सत्गुरु महाराज, श्री अमरापुर बस द्वारा सन्त मण्डली सहित "सम्बलपुर" के प्रेमियों को दर्शन लाभ देते हुए "दल्ली–राजहरा पहुँचे जहाँ प्रेमियों द्वारा प्रेम पूर्वक स्वागत सत्कार किया गया। शाम को प्रवचन में पूज्य श्री ने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सत् उपदेश को प्रेमियों को समझाते हुए बताया कि इस मानव शरीर के द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। जब इस शरीर से आतम चेतन शक्ति निकल जायेगी तो ये शरीर किसी काम का नहीं इसलिए शरीर के रहते ही प्रभु परमात्मा से सांसारिक पदार्थ न मांगकर अपने मन को यह समझाना है :–

दिसी दुनिया जा रंग तमाशा, लोभ लहर में मतां वहीं,
दुनियां मां सुख मिलणों नाहे, छो न दुनिया खां धार रहीं,
सुमरन कर गुरु अन्तर जो, सुमरन सभ कष्ट मिटाइन्दो,
धीरज घर, मन मुहिजां सत्गुरु काज बणाइन्दो,
बेड़ा पार लग़ाइन्दो, दुखड़ा दर्द मिटाइन्दो।

राजनान्दगांव के झूलेलाल मन्दिर व अन्य मन्दिरों में सत्संगानन्द (२३ जनवरी २००३)

२३ जनवरी, गुरूवार, प्रातः लगभग ८:०० बजे दल्ली राजहरा के प्रेमियों को आशीर्वाद देकर सत्गुरु महाराज राजनांदगांव के लिए श्री अमरापुर बस से रवाना हुए। रास्ते में बालोद के प्रेमियों के विशेष आग्रह पर कुछ घरों व दुकानों पर पल्लव पाकर व श्री हेमराज जिज्ञासी के गुरुद्वारे में आशीर्वचन देकर भाई किशनचन्द के स्थान पर राजनांदगांव पहुँचे जहाँ प्रेमियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। शाम को

सत्संग का आयोजन श्री झूलेलाल मन्दिर में किया गया। जहाँ पूज्य श्री सत्संग की मौज में आकर फरमाने लगे कि–

''अगी आदत मट त सिघा मिलनी सुप्रीं''

सत्गुरु से राह लेकर अपने ही मन से पूछना चाहिए कि हे मेरे मन अब तेरे को हीरे जेसा अमोलक जन्म मिला है इस देव दुर्लभ शरीर को पाकर राम नाम को न विसारना है लेकिन हमने उस प्रभु को भुला दिया है। पूज्य श्री ने सिन्धु की एक माता की कथा बताई कि एक बुढ़िया शाम के वक्त अपनी कुटिया में सुई से कुछ सी रही थी कि उसकी सुई नीचे गिर गई घर में लालटेन था नहीं अंधेरा था इसलिए वह घर के बाहर चौराहे पर सरकारी बत्ती की रोशनी में चलनी लेकर मिट्टी छानने लगी पर सुई नहीं मिली। एक सन्त जी वहां से गुजर रहे थे, उन्होंने पूछा कि माता क्या ढूंढ रही हो माता ने कहा सुई, सन्त श्री ने पूछा माता सुई कहां खोई, माता ने कहा घर में, सन्त जी ने कहा कि जो चीज जहां पर खोई वह चीज वहां पर ही मिलेगी। यही सिद्धान्त गुरू महाराज जी समझा रहे हैं कि जो प्रभु हमसे बिछड़ गया है वह हमारे अन्दर ही है बाहर कितने ही जन्मों तक ढूंढते रहेंगे। मिलने वाला नहीं सत्गुरु से युक्ति लेकर एकान्त में बैठकर उसको अपने ही अन्दर में पाना है जैसे वर्षो से बन्द कमरे में मन भर रोशनी की जरूरत नहीं, एक ही दियासलाई काफी है वैसे ही वर्षो से जन्मों से इस मन में अज्ञान रूपी घोर अन्धकार के लिए एक ही नाम रूपी दियासलाई काफी है जिसे जलाकर प्रभु के दर्शन कर सकते हैं इतना कहकर पल्लव पाकर सत्संग का समापन किया।

बेमेतरा के सिन्धु भवन में सतसंग वर्खा (२४ जनवरी २००३)

जनवरी २४, शुक्रवार, प्रातः लगभग ७:३० बजे पूज्य श्री ने श्रीसतराम धाम पर आशीर्वाद देकर व पल्लव पाकर ''बेमेतरा'' के लिए प्रस्थान किया व श्री जमना दास जी के निवास पर पहुचे जहाँ प्रेमपूर्वक स्वागत किया गया। सांय सिन्धू भवन में प्रवचन करते हुए फरमाया कि ''नाम हरी का भुला न देना। जीवन अपना रूला न देना'' अगर हम मन से पूछेगे कि तेरी इच्छाओं की हद कहाँ तक है जवाब मिलेगा शान्ति व सुख तक ये मिलेगी कब ? जैसे एक डाक्टर किसी बीमारी की दवाई के साथ मरीज को परहेज भी करना बताता है वैसे सतगुरू रूपी डाक्टर शिष्य रूपी मरीज को इच्छा रूपी बीमारी की दवाई (नाम–जप) के साथ विषय विकारों से दूर रहने की परहेज भी बताता है जिससे शान्ति व आत्मिक सुख प्राप्ति होगी।

कहे टेऊँ भये सन्त दयालु, अपनी शरणी लाया
मरा मरा दे मन्त्र उसको, एक जगह बिठलाया
राम राम रट तीन काल का ज्ञान उसी ने पाया
सन्त समागम एक घड़ी भी, वृथा कबहूँ न जाई
साध संगत की तीन लोक में जानो बड़ी बड़ाई

इससे पहले कि हमारे जीवन का सूरज ढल जाय गुरू बाबा की शरण लेकर उनसे युक्ति सीखकर निरन्तर अभ्यास व वैराग के द्वारा इस जीवन की किश्ती इस तरह पार लग जायेगी जिस तरह लोहे रूपी कील लकड़ी का संग करके पार तर जाती है इतना कहकर धुनि व पल्लव पाकर सत्संग का समापन किया ।

दुर्ग के जय बाबा धाम में बही सत्संगामृत की ज्ञान गंगा *(२५-२६ जनवरी)*

जनवरी २५, शनिवार प्रातः लगभग ८ बजे बमेतरा के प्रेमियों से स्नेह भरी विदाई लेकर सद्गुरू भगवान सन्त मंडली सहित दुर्ग के लिए रवाना हुए, दुर्ग में श्री भागचन्द जी के निवास स्थान पर आकर ठहरे जहाँ अनेक प्रेमियों द्वारा स्वागत सत्कार किया गया दोपहर को विश्रामी होने के बाद सांयकालीन सतसंग श्री तिलोकदास दरबार (जय बाबा धाम) में रखा गया जहाँ पूज्य श्री के वचनों में **''सतगुरू स्वामी अन्तर्यामी दीननि दयाल थी''** ईश्वर की कृपा सन्त महात्माओं की कृपा हमारे ऊपर हो गई अब इन तीन कृपाओं का लाभ हमें तभी मिलेगा (यह एक प्रकार का चैक है जब इस चैक को भुनायेंगें नहीं, तब तक पैसे नही मिलेंगें) जब चौथी कृपा हम अपने ऊपर करें वह यह कि हम सन्तों से बाहरी कृपा यानि सांसारिक पदार्थ जो कि उनके अनन्त भंडार की एक छोटी सी किरण है (जेदो तुहिंजो नांव, तेदी तोखां बाझ घुरां) वह नहीं मांगकर, (सतगुरू किसी दरवेश के दिल का खजाना लूट लेना) से विशाल खजाने से नाम की प्राप्ति करें, जिससे इसी जन्म में परमात्मा से मिलन हो जाय।

हो सैनो नाई, जहं प्रीत पकी पाई
संतन जी ओट वती प्रेम में रंगजी वियो
नौकरी भुलिजी, प्रभूअ तंहजी पैज रखी

नंग पालण पंहजो प्रभूअ जी रीति हीअ पुराणी आ सतपुरूषन जी वाणी आ, मन में ईहो विश्वास आ

मन मे पक्का विश्वास आ जाय कि सतगुरू देव पल पल हमारे साथ हैं पल्लव पाकर सतसंग का समापन किया। २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस प्रातःकाल का सतसंग रायपुर नाके पर पंचायती धर्मशाला में किया गया, जहाँ सतगुरू महाराज ने प्रवचन देते हुए कहा कि **दिठो सब विसार अणदिठे खे याद कर।** हे प्रभू मैं तेरे द्वार पर आया हूं, मेरे ऊपर ऐसी दया करो कि मैं सतत् आपके नाम का स्मरण करता रहूँ व एक दिन ऐसा आये कि मुझे तुम्हारे दर्शन हो जायें। सायकाल का सतसंग जय बाबा धाम में किया गया, आज बड़ी संख्या में प्रेमी बेमेतरा, भाटापारा वगैरह से भी आए थे रायपुर की महिला मंडली तो हरी पोशाकों में ऐसे लग रही थी मानो धरती पर हरियाली छा गई हो **प्रेम पुस्तक का अजब इशारा, जिन समझया थिया बाग बहारा।** जिस प्रकार तुलसीदास की पत्नी ने तुलसीदास के द्वार पर वचन की ऐसी चोट की कि उसका जीवन ही बदल गया, उसी प्रकार जिस दिन हमारे दिल पर सन्तों के उपदेश की चोट लगेगी उस दिन हमारे जीवन की दिशा ही बदल जायेगी।

अन्त में सतगुरू भगवान ने सत्नाम साक्षी की धुनि लगाकर पल्लव पाया व राम नाम का छंड़ा लगाकर छतीसगढ़ की २१ दिन की सतसंग समागम की धर्म यात्रा पूरी करके २७ जनवरी सुबह ७ बजे दिल्ली हरिद्वार होते हुए गुलाबी नगरी जयपुर के लिए, प्रेमियों की आशा भरी निगाहो पर प्रेम भरी आंखो से प्यार छलका कर जरा मुस्कराकर विदा हो लिए।

संकलन–संत हरिओमलाल, संत नरेश कुमार (इन्दौर),
सांवल प्रेमप्रकाशी (मुरैना),
आत्माराम गोइंदानी (भाटापाड़ा),
कु. राखी प्रेम प्रकाशी (भाटापाड़ा) की कलम से

मुम्बई के मुलुण्ड कालोनी में गुरूदेव के दर्शनों से उल्लासित हुए मुलुण्ड वासी

भक्तों की निगाहें उस संयम उल्लासित हो गयी, जब पूज्य गुरूवर लोंगो के सम्मुख हुए। कई दिनों की इंतजारी उस दिन भी सुबह छायी थी बेकरारी, भक्तों की बेकरार आँखें पूज्य गुरूवर को अपने पास पाकर मानो पलक झपकने का नाम नहीं ले रही थी। मुंबई मुलुंडवासियों के लिए वो दिन सुहाना था, वो घड़ी अनमोल थी जिसका प्रेमियों का इंतजार था, अपने गुरूवर श्री स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज (वर्तमान गदीसर प्रेम प्रकाश मंडल) के दर्शन का– धनभागी प्रेमियों के खुशियों का भंडार ऊँचा हो गया। जिस वक्त स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज ने मुलुंड कालोनी के लिए अर्ज मंजूर किया और उस अर्ज के कर्जदार माननीय ओम प्रकाश बच्चानी और उनके पिता श्री छब्बलदास बच्चानी गुरू महाराज को अपनी कुटिया में चरण कमल पधारने के लिए लाये प्रातः काल ७:३० बजे १–१२–२००२ को गुरू महाराज अपनी शिष्यमंडली के साथ श्री ओम प्रकाश बच्चानी के घर पधारे जहाँ उनका फूलों की बौछार के साथ उनके घरवालों ने और प्रेमियों ने शानदार स्वागत किया।

गुरू महाराज की इच्छा से कुछ प्रेमियों ने भजनों व संगीत की लहर लहरायी जिसमें पूरी साध–संगत झूम उठी। गुरू महाराज ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का आरम्भ भी



किया और अपने सभी प्रेमियों को अलग अलग आशीर्वाद और प्रसाद देकर प्रेमियों की खुशियों का खजाना भर दिया तत्पश्चात् गुरू महाराज और पूरी साध संगत श्री कन्हैयालाल मेहतानी श्री गोपालदास भागचंदानी और किशनचंद परियानी की कुटिया में पधारे जहाँ उन सभी परिवारों ने धूम धाम से सुस्वागत किया और गुरू महाराज का आशीर्वाद पाया।

गुरू महाराज जी के प्रेमियों की खुशी का ठिकाना न रहा जब वर्ष में एक बार मुलुंड वासी प्रेमियों को कालगीधर दरबार में आकर सत्संग की वर्खा करने का आश्वासन दिया, और सभी मुलुंड वासी प्रेमियों को हर वर्ष गुरू महाराज के दर्शन और आशीर्वाद का इंतजार रहेगा। नही भुलाए जा सकेंगे कभी पूज्य गुरूवर के साथ बीते वो अनमोल पल। **(अनिल दावानी मुलुण्ड से)**

अमरापुर समाचार दर्शन

श्री गुरूधाम पर हुई बसन्त बहार

रंगोली पुष्पों की झांकी दर्शन व सत्संग से हुए प्रेमी सराबोर

भारत देश में प्रचलित छः ऋतुयें, जिनमें मुख्य हैं ऋतु बसन्त, जो कि अपना विशेष ही महत्व रखती है। इसके आने के साथ ही चारों ओर पीतवर्ण की चादर बिछ जाती है। हरियाली ही हरियाली, पुष्पों की बहार, पीली सरसों, गंधे के लहराते पीले पुष्प, मंडराते भंवरे, तितलियों के झुण्ड का अनोखा नजारा जहाँ नजर आती है दिखाई पड़ता है।

नई कपोलों के साथ वृक्ष, फूलों का श्रृंगार अमराइयों में बैठी कोयल की आवाज भी मधुर स्वर का संचार करती है।

जिस प्रकार बाहरी ऋतु में बसन्त ऋतु है उसी प्रकार जिज्ञासुओं के हृदय में भी एक बसन्त होता है वह है वैराग्य रूपी बसन्त।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, ग्रन्ध इन पांच विषयों का त्याग करके हृदय में जागृत होता है वैराग्य रूपी बसन्त। जिसके प्राप्ति के साथ–साथ मनुष्य का जीवन सार्थक हो जाता है।

ऐसी बसन्तोत्सव का मांगलिक पर्व श्री अमरापुर स्थान जयपुर में गुरूवार ६ फरवरी को मनाया गया। आइये हम भी इसी बसन्तोत्सव में कलम के जरिये शामिल होकर अपने आप को बसन्त के पीत वर्ण में ढ़ालें।

जयपुर का व्यस्ततम एम.आई. रोड जिसके मुख्य मार्ग पर बना "अमरापुर स्थान" आज पीला–पीला प्रतीत हो रहा था। मुख्य द्वार से ज्योंहि प्रवेश किया तो विभिन्न प्रकार के गुलालों से आकर्षक रंगोंली की बनावट देखकर, जैसे ही गुरुमुख द्वार की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे तो नेत्र प्रफुल्लित हो गये।

सीढ़ियों के प्रारम्भ में बनाया गया गुलालों से एक पुष्प और उस पुष्प के मध्य में एक टेबल पर रखा गया था। जल का बड़ा पात्र, जिसके ऊपर विभिन्न प्रकार के रंगों से आकर्षक सजावट करके बीच में "ॐ" बनाया गया था। जल के पात्र में "ॐ" को अड़िग टिका देखकर मन में ख्याल आया कि "ॐ" ही भगवान का वह मंत्र है जिसके सहारे हम संसार रूपी सागर से पार हो सकते हैं।

गुरुमुख द्वार के इस अद्भुत सजावट को देखकर सत्संग हाल में प्रवेश किया तो पूरे सत्संग परिसर को पीले गंधे के पुष्पों से सजाया गया था। सत्संग मंच के मध्य में झोपड़ीनुमा प्रकोष्ठ जिसके चारों और पीतवर्ण के पुष्पों से सुसज्जित सजावट और इस आकर्षक प्रकोष्ठ में विराजमान थे। आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज और हमारे प्यारे इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण की चिताकर्षक चित्र, जो सजीव होने का आभास दे रहे थे।

वहीं अन्दर समाधि स्थल, श्री मन्दिर व लक्ष्मी नारायण मन्दिर की आभा भी किसी कोने से कम नहीं लग रही थी।

समाधि स्थल पर पुष्पों की पत्तियों, पुष्पों व पुष्पों के गुच्छों से सजावट, श्री मन्दिर व लक्ष्मीनाराण मन्दिर में प्रतिमाओं को पीताम्बरी वस्त्र पहनायें गये श्री दरबार को चारों ओर से पीताम्बरी चुनरी में ढका गया था, जिसको देखकर नेत्रों को पीताम्बरी आनन्द की अनुभूति हो रही थी।

प्रातः ७ बजे श्री प्रार्थना का स्वर श्री दरबार में गुंजायमान हुआ तो पीतवर्ण के साथ–साथ श्री दरबार पीताम्बरी स्वर से उद्घोषित हो उठा। प्रार्थना के पश्चात् शुरू हुआ सन्तों के अमृत प्रवचनों की वर्षा जिसमें सन्तों ने बसन्त की महिमा का बखान किया।

"ऋतु ऋतु में रंग साहेब का-बसन्त ऋतु रंगवारी रे"

भजन :–बिरह बसन्त मेरे घर आया होया मंगलाचारा जी

उन्होंने बताया कि वैराग्य रूपी बसन्त हमें अपने हृदय में जागृत करनी चाहिये। जितने भी सन्त महापुरूष हुये हैं, उन्होंने पहले वैराग्य धारण किया तब ही उन्हें परमात्मा की प्राप्ति हुई। आप भी प्रतिदिन श्री अमरापुर धाम आकर प्रार्थना, सत्संग में भाग लेकर मानव जीवन को सार्थक बनायें।

तत्पश्चात् सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के अमृत प्रवचनों का केसेट्स चलाया गया, जिसमें गुरु महाराज ने बसन्त ऋतु से होने वाले फयदे को बताया। प्रवचन कैसेट में बताया कि बसन्त ऋतु के २ महीने तक आप प्रतिदिन प्रातः २–३ मील पैदल चलो, आप सभी यहाँ अमरापुर स्थान में आकर सत्संग का लाभ लो। जिससे शरीर की तन्दुरुस्ती व विवेक शक्ति भी बढ़ेगी। फिर सभी सन्तगण व प्रेमियों ने मिलकर गुरु महाराज की मूर्तियों को कुंगू–केसर व गुलाल से तिलक लगाकर पूजा की। और फिर गुरु प्रार्थनाष्टक व आरती बोलकर इस बसन्तोत्सव का समापन हुआ।

इसी प्रकार सायं ४ से ६ बजे तक भक्ति संध्या, सन्तों द्वारा बसन्त महिमा व आरती तथा समाधि स्थल पर पीले पुष्पों की झांकी आकर्षण केन्द्र बनी हुई थी।

बसन्तोत्सव में सन्त नामदेव जी पुजारी प्रतापराम जी, संत हीरानन्द जी, सन्त मनोहरलाल जी, सन्त मोनूराम आदि सन्तवृन्दों ने बसन्त की महिमा का बखान किया।

गुड़िया, जयपुर से

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, श्रीपुरा कोटा की ५०वं वर्षगाँठ



के उपलक्ष में बाहर से पधारे हुये आगन्तुक प्रेमियों के लिये निःशुल्क चिकित्सा सुविधा का शिविर लगाया गया जिसमें ५ दिन तक करीब १५० रोगियों का निःशुल्क ईलाज डॉ. हीरानंद सोनी द्वारा किया गया।

शोक समाचार

भक्त चन्द्रू जो कि सन्त बुधर प्रकाश जी की सेवा में उल्हास नगर से खार मुम्बई आश्रम के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए थे, मेले की पूर्णता के पश्चात उसी रात्रि ५ जनवरी को रात्रि १:३० बजे खार आश्रम पर ही सन्तो की सेवा में रहते हुए भाग्यशाली भक्त चन्द्रू अमरापुर धाम सिधारे।

पुस्तक समीक्षा मूल्य ३/–रु

जन्म साखी

(सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज)

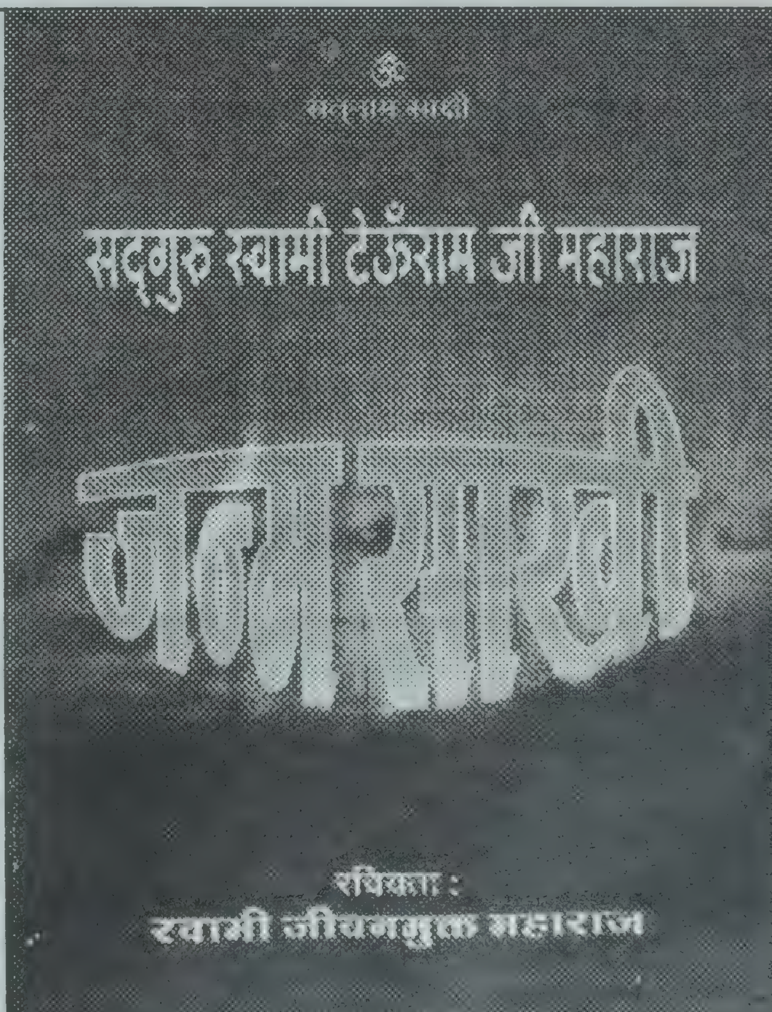
आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा सभी कवियों भक्तों एवं सन्त महात्माओं ने की है। किसी ने भजन के माध्यम से तो किसी ने रचना–पद–कवितायें लिखकर।

स्वामी जीवन मुक्त जी महाराज द्वारा लिखित "जन्म साखी" पुस्तक में सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जन्म वृतान्त को सिन्धी देवनागरी भाषा में १३ पदों (शैर) में लिखा गया है।

पुस्तक में महिमा सम्बन्धित भजन व आरती आदि सम्मिलित की गई है। पुस्तक का मूल्य मात्र ३/– रू. रखा गया है।

प्राप्ति स्थल

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई. रोड़, जयपुर एवं सभी प्रेम प्रकारा आश्रमों पर उपलब्ध है।



प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल में

दादा आसूराम जी महाराज का

वर्सी उत्सव

19 फरवरी (बुधवार) व 20 फरवरी (गुरूवार) 2003

समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि दादा आसूराम जी महाराज का वर्सी उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, खैरथल में बुधवार १६ फरवरी व गुरूवार २० फरवरी २००३ को धूमधाम से मनाया जा रहा है।

आप इस महोत्सव में आकर महापुरूषों की गुणगाथा श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनायें।

कार्यक्रम

19 फरवरी 2003, बुधवार	प्रातः 7 से 10 सत्संग, प्रवचन सायः 4 से 6 सकीर्तन यात्रा, सत्सग आरती
20 फरवरी 2003, गुरूवार	प्रातः 7 से 10 सत्संग, प्रवचन सायः 4 से 7 भजन–सत्संग–आरती व पल्लव के साथ उत्सव का समापन

सेवा में, पूज्य पंचायत खैरथल	पता : सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टीले के ऊपर, खैरथल फोन : 01460–222737

तीन भाषाओं में प्रकाशित | ॐ श्री सत्नाम साक्षी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा विरचित महाग्रन्थ

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

सिन्धी	हिन्दी	गुरुमुखी
151/-	301/-	501/-

सभी प्रेम प्रकाशी "आचार्य श्री" द्वारा रचित ग्रन्थ साहब को अपने घर में रखकर प्रतिदिन पाठ करें।

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान, जयपुर के अलावा सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में




महाशिवरात्रि

शनिवार

1 मार्च, 2003

प्रातः 7:00 से 11:00 तक

सत्संग-हवन-श्री अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर में ध्वजावन्दन-पूजा अर्चना व आम भण्डारा।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर

बसन्त पंचमी ६ फरवरी से सत्संग समय सारणी में परिवर्तन

प्रतिदिन सत्संग का समय

प्रातः 7 से :20 तक प्रार्थना–सत्संग प्रवचन
सांय 4:30 से 6 तक भक्तिसंध्या सत्संग

आरती

सांय 6 से 6:20 तक

प्रत्येक रविवार

प्रातः 7 से 9:30 प्रार्थना सत्संग–प्रवचन कैसेट
सांय 4:30 से 6:30 तक सत्संग–भजन–आरती

गुरूवार व शनिवार

प्रातः 7 से 8:30 तक सत्संग–गुरू प्रार्थनाष्टक का पाठ
सांयं 4:30 से 6:30 तक भजन संध्या – सत्संग आरती, सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप

प्रत्येक गुरूवार व शनिवार को सांय 5 से 8:30 तक समाधि स्थले पर पुष्पों की झाँकी का दर्शन करें।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

जयपुर में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का
82 वाँ चैत्र मेला
15 अप्रैल से 19 अप्रैल 2003 तक

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर-302 001

ग्वालियर में

स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का 102वां जन्मोत्सव

२६ फरवरी बुधवार से २ मार्च रविवार २००३ तक

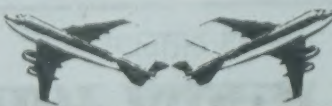
स्थल : प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, ग्वालियर (म.प्र.)

चित्तौड़गढ़ में नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन

चित्तौड़गढ़। प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के द्वारा प्रवर्तित श्री प्रेम प्रकाश मण्डली के विशाल वट वृक्ष की एक शाखा २५ नवम्बर को च-२६,३० हाऊसिंग बोर्ड, कुम्भानगर, चित्तौड़गढ़ में सन्त शिरोमणि परम पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के कर कमलों से शुभारम्भ हुई। विशाल संख्या में उत्साही प्रेमियों की उपस्थिति में वेदोक्त मन्त्रोच्चारण के पवित्र वातावरण में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी बसन्तराम जी महाराज, जटाधारी शिवशंकर व सिन्धी समाज के इष्टाराध्य भगवान झूलेलाल की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा भी की गयी। श्री विष्णु खटवानी के अनुसार २१ से २५ नवम्बर तक आयोजित उद्घाटन समारोह के अन्तर्गत वेदान्त केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज का जन्मशती समारोह भी मनाया गया। विशेष सत्संग सभाओं में सहस्त्र दीप प्रज्जवलन की अलौकिक छटा मनमोहक थी।

तीज-त्यौहार

16	फरवरी	2003	रविवार	श्री सत्यनाराण, पूर्णिमा व्रत
20	फरवरी	2003	गुरूवार	श्री गणेश चौथ व्रत
27	फरवरी	2003	गुरूवार	विजया एकादशी व्रत
1	मार्च	2003	शनिवार	महाशिवरात्रि व्रत, स्वामी गणेशानन्द जयन्ती (ग्वा.)
2	मार्च	2003	रविवार	श्राद्ध की अमावस्या
3	मार्च	2003	सोमवार	स्नान दान की सोमवती अमावस्या
4	मार्च	2003	मंगलवार	चन्द्रदर्शन
8	मार्च	2003	शनिवार	चौथ सद्गुरु टेऊँराम जन्म दिवस (मासिक)
11	मार्च	2003	मंगलवार	होलकाष्टक प्रारम्भ
14	मार्च	2003	शुक्रवार	आमलकी एकादशी व्रत, मीन संक्रान्ति
17	मार्च	2003	सोमवार	होलिका दहन, पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
18	मार्च	2003	मंगलवार	होली, धुरेण्डी, होलकाष्टक समाप्त, स्नान दान की पूर्णिमा
20	मार्च	2003	गुरुवार	भाईदूज
21	मार्च	2003	शुक्रवार	श्री गणेश चौथ व्रत
22	मार्च	2003	शनिवार	श्री रंगपंचमी
28	मार्च	2003	शुक्रवार	पापमोचिनी एकादशी व्रत


श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

17 फरवरी	2003		भण्डारा	☎ 07184–258257, 254915
18 से 21 फरवरी	2003	तक	नागपुर, अमरावती	☎ 0712–583458, 595830
22 फरवरी	2003		यात्रा नागपुर से चेन्नई एक्सप्रेस में	☎ 098290–14850
23 फरवरी से 25 फरवरी	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
26 फरवरी	2003		जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा यात्रा	☎ 098290–14850
26 फरवरी से 2 मार्च	2003	तक	ग्वालियर (स्वामी गणेशानन्द जयंती)	☎ 0751–2426111
3 मार्च से 4 मार्च	2003	तक	डबरा	☎ 07524–223245
5 मार्च	2003		दतिया	☎ 07522–236333
6 मार्च से 8 मार्च	2003	तक	मुरैना	☎ 07532–230280
9 मार्च से 12 मार्च	2003	तक	आगरा	☎ 0562–2211499
13 मार्च से 14 मार्च	2003	तक	अलीगढ	☎ 0571–2420591
15 मार्च से 18 मार्च	2003	तक	हरिद्वार	☎ 01334–260144, 260815
19 मार्च	2003		दिल्ली से बरेली एक्सप्रेस में यात्रा	☎ 098290–14850
20 मार्च से 22 मार्च	2003	तक	गांधीधाम	☎ 02836–211001, 31612
23 मार्च से 24 मार्च	2003	तक	राजकोट	☎ 2455250, 098290–14850
25 मार्च से 26 मार्च	2003	तक	जामनगर	☎ 098290–14850
27 मार्च	2003		द्वारिका	☎ 02891–233215, 098290–14850
28 मार्च	2003		सोमनाथ, जेतपुर	☎ 098290–14850
29 मार्च	2003		भावनगर	☎ 0278–567920, 98252–05783
30 मार्च से 1 अप्रेल	2003	तक	अहमदाबाद	☎ 079–2863900, 2869816
2 अप्रेल से 3 अप्रेल	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
4 अप्रेल से 6 अप्रेल	2003	तक	पाली, जोधपुर	☎ 098290–14850
7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003	तक	जयपुर (चैत्र मेला)	☎ 0141–2372423, 2372424
23 अप्रेल	2003		देवास	☎ 098290–14850
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003	तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)	☎ 0731–2468140, 2300140
30 अप्रेल से 1 मई	2003	तक	रतलाम	☎ 07412–240229
2 मई से 8 मई	2003	तक	दिल्ली (स्वामी जयप्रकाश वर्सी)	☎ 011-23969774, 23942126
9 मई से 10 मई	2003	तक	लखनऊ	☎ 0522–2211901, 2213819
11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्‌गुरु हरिदासराम जयन्ती)	☎ 0512–2215747
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	☎ 0532–2655214
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	☎ 0542–225585
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	☎ 05278–246159
24 मई	2003	तक	बड़राईच	☎ 098290–14850

ॐ श्री सतनाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य

हिन्दी

1.	श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	301/-
2.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम-द्वितीय भाग)	50/-
3.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय-अन्तिम भाग)	75/-
4.	अमरापुर वाणी (भजन संग्रह)	30/-
5.	अमर कथा	10/-
6.	अमरापुर दर्शन	5/-
7.	यमराज नचिकेता (कवित्त)	5/-
8.	चूड़ाला शिखरध्वज (कवित्त)	5/-
9.	श्री प्रेम प्रकाश दोहावली	2/-
10.	प्रार्थना	10/-
11.	ब्रह्मदर्शनी (पद)	10/-
12.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	5/-
13.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	10/-
14.	साक्षी दर्शन	2/-
15.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/-
16.	सद्गुरू टेऊँराम चालीसा	1/-
17.	गुरू आराधना (सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन)	15/-
18.	गुरू वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन)	10/-
19.	हे मेरे मन जागो!	10/-
20.	वामन बली	5/-
21.	कवितावली छन्दावली	2/-
22.	जन्म साखी (सद्गुरू टेऊँराम जी)	3/-
23.	नित्य नियम प्रार्थना	5/-
24.	स्वामी शान्ति प्रकाश जीवन चरित्र	30/-
25.	स्वामी टेऊँराम महिमा भजन	25/-
26.	स्वामी गुरूमुखदास भजन माला	2/-
27.	स्वामी गुरूमुखदास दोहावली	2/-
28.	गुरू पद लागो	10/-

सिन्धी

1.	श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	151/-
2.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम-द्वितीय भाग)	50/-
3.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय-अन्तिम भाग)	50/-
4.	स्वामी शान्ति प्रकाश जीवन चरित्र	30/-
5.	अमरापुर वाणी (देवनागरी लिपि)	30/-
6.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/-
7.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	10/-
8.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	10/-
9.	साक्षी दर्शन	2/-
10.	गुरू अराधना (सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन)	15/-
11.	प्रार्थना	5/-
12.	भजन बहार भाग-प्रथम (देवनागरी लिपि)	30/-
13.	भजन बहार भाग-द्वितीय (देवनागरी लिपि)	30/-
14.	नित्य नियम प्रार्थना	5/-

अंग्रेजी

1.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम-द्वितीय भाग)	10/-
2.	सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय-अन्तिम भाग)	50/-
3.	प्रार्थना	3/-
4.	ब्रह्मदर्शनी	50/-
5.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	10/-
6.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	50/-
7.	अमरापुर दर्शन	2/-
8.	गुरू अराधना	10/-
9.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/-
10.	नित्य नियम प्रार्थना	5/-

गुरूमुखी

1.	प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	501/-
2.	जन्म साखी (सद्गुरू टेऊँराम जी)	5/-

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की अधिकृत हिन्दी, अंग्रेजी व सिन्धी पत्रिकाएँ

प्रेम प्रकाश संदेश

सदस्यता शुल्क *भारत में* (मासिक हिन्दी में)

वार्षिक शुल्क	रु.	50.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	140.00
विदेश में वार्षिक शुल्क	रु.	350.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	1000.00

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : प्रेमप्रकाश संदेश
प्रेमप्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर–01 फोन : 2454183

अमरापुर सन्देश

सदस्यता शुल्क *भारत में* (त्रैमासिक अंग्रेजी में)

वार्षिक शुल्क	रु.	200.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	550.00
विदेश में वार्षिक शुल्क	रु.	500.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	1400.00

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : अमरापुर सन्देश
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई रोड
जयपुर– फोन : 2372423, 24

सत्नाम साखी संदेश

सदस्यता शुल्क *भारत में* (त्रैमासिक सिन्धी में)

वार्षिक शुल्क	रु.	150.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	400.00
विदेश में वार्षिक शुल्क	रु.	500.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	1400.00

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : सत्नाम साक्षी सन्देश
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई रोड
जयपुर– फोन : 2372423, 24

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा.शा.रजि. 29/18/81-II

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे अमृत (अयोध्या काण्ड)

''बदऊँ गुर पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि''

चित्रकूट में पिता की मृत्यु के शोक में भरत का श्री राम के सामने विलाप करते देख शिक्षित बुद्धिवाले अत्यन्त धीर भगवान राम का उन्हें सात्वनां देते हुए कहना :-

भाई : यह जीव ईश्वर के समान स्वतंत्र नहीं है। अतः कोई यहाँ अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर सकता। काल इस पुरूष को इधर-उधर खींचता रहता है।१।

समस्त संग्रहों का अंत विनाश है। लौकिक उन्नतियों का अंत पतन है। संयोग का अंत वियोग है। और जीवन का अंत मरण है।२।

जैसे पके हुए फलों को पतन के सिवा और किसी से भय नहीं है, उसी प्रकार उत्पन्न हुए मनुष्यों को मृत्यु के सिवा और किसी से भय नहीं है।३।

जैसे सुदृढ़ खम्भे वाला मकान भी पुराना होने पर गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य जरा और मृत्यु के वश में पड़कर नष्ट हो जाते है।४।

जो रात बीत जाती है, वह लौटकर फिर नहीं आती है। जैसे यमुना, जल से भरे हुए समुद्र की ओर जाती है, उधर से लौटती नहीं।५।

दिन रात लगातार बीत रहे हैं और इस संसार में सभी प्राणियों की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं ठीक वैसे ही जैसे सूर्य की किरणे ग्रीष्म ऋतु में जल को शीघ्रतापूर्वक सोखती रहती है।६।

तुम अपने लिये चिंता करो, दूसरे के लिए क्यों बार-बार शोक करते हो। कोई इस लोक में स्थित हो या अन्यंत्र गया हो, जिस किसी की भी आयु तो निरन्तर क्षीण ही हो रही है।७।

मृत्यु साथ ही चलती है, साथ ही बैठती है और बहुत बड़े मार्ग की यात्रा में भी साथ ही जाकर वह मनुष्य के साथ ही लौटती है।८।

शरीर में झुर्रियाँ पड़ गयी, सिर के बाल सफेद हो गये, फिर जरावस्था से जीर्ण हुआ मनुष्य कौनसा उपाय करके मृत्यु से बचने के लिये अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है।६।

लोग सूर्योदय होने पर प्रसन्न होते हैं, सूर्यास्त होने पर भी खुश होते हैं। किंतु यह नहीं जानते कि प्रतिदिन अपने जीवन का नाश हो रहा है।१०।

किसी ऋतु का प्रारम्भ देखकर मानो वह नयी-नयी आयी हो (पहले कभी आयी ही न हो) ऐसा समझकर लोग हर्ष से खिल उठते है परंतु यह नहीं जानते कि इन ऋतुओं के परिवर्तन से प्राणियों के प्राणों का (आयु का) क्रमशः क्षय हो रहा है।११।

जैसे महासागर में बहते हुए दो काठ कभी एक-दूसरे से मिल जाते हैं और कुछ काल के बाद अलग भी हो जाते हैं, उसी प्रकार स्त्री, पुत्र कुटुम्ब और धन भी मिलकर बिछुड जाते है। क्योंकि इनका वियोग अवश्यंभावी है।१२।

इस संसार में कोई भी प्राणी यथासमय प्राप्त होने वाले जन्म मरण का उल्लंघन नहीं कर सकता, इसीलिये जो किसी मरे हुए व्यक्ति के लिए बार-बार शोक करता है, उसमें भी यह सामर्थ्य नहीं है कि वह अपनी ही मृत्यु को टाल सके।१३।

जैसे आते जाते हुए यात्रियों अथवा व्यापारियों के समुदाय से रास्ते में खड़ा हुआ पाथिक यों कहें कि मैं आप लोगों के पीछे-पीछे आऊँगा। और तदानुसार वह उनके पीछे-पीछे जाये, उसी प्रकार हमारे पूर्वज, पिता, पितामह आदि जिस मार्ग से गये है, जिस पर जाना अनिवार्य है तथा जिससे वचने का कोई उपाय नहीं है, उसी मार्ग पर स्थित हुआ मनुष्य किसी और के लिए शोक कैसे करें ?।१४।

जैसे नदियों का प्रवाह पीछे नहीं लौटता उसी प्रकार दिन-दिन ढलती हुई अवस्था फिर नहीं लौटती है। उसका क्रमशः नाश हो रहा है। यह सोचकर आत्मा को कल्याण के साधनभूत धर्म में लगावें, क्योंकि सभी लोग अपना कल्याण चाहते है। ......शोभा

समर... सूचनार्थ उनके प्रेषण पत्र ... ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। ★ व्यवस्थापक

सदस्यता क्रं.

श्रीमान,

832-15060-7/20
श्री किशनचंद कूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर. राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। **सम्पादक :** शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183